भूधरजैनशतक

भूधरदासजी आगरा निवासी कृत

जिस्को

मुन्शी अमनसिंह सुनपत निवासी अर्जी नवीस दर्जा अव्वल जिला दिल्ली नैं शब्दार्थ वा सरलार्थ टीका से सुभूषित और सरल वा संशोधन कर

दिल्ली

[भारतदर्पण] प्रेस महल्ला आमिली मैं पण्डित काशीनाथ शर्म्मा के प्रबन्ध से छपाकर प्रकाश किया

वैक्रमीय सम्वत् १९४७ । फाल्गुणे शुक्लपक्षे

प्रथमबार १०००   मूल्य प्रतिपुस्तक जिल्दसहित ।।/

सूचना

परमसुहृद् जैनमतावलम्बी भाइयों को विदित हो कि कविवर भूधरदासजीने बडे परिश्रमसे शास्त्रका सार भूधरविलास नाम ग्रन्थ भाषा ललित अनेक छन्दोंमें सर्व साधारण के उपकारार्थ बनाया किन्तु इसमें जहाँ तहाँ संस्कृत प्राकृत गुजराती आदि भाषा होने के कारण प्रत्येकके समझमें आना कठिनथा अतः इसी परमउपकारी ग्रन्थमेंसे एक शतक मुन्शी अमनसिंह जी ने महान् श्रम और उत्साहसे अनेक कोश वा छन्दरचना के ग्रन्थ एकत्रित करके शब्दार्थ वा सरलार्थ टीकासे अति सरल कर दिया पुनः विनाछपे सुलभ कैसेहो और छापेखानों में यवनादि कर्म्मचारियों के हाथ में जाने से धर्म्म की हानि होनेके कारण हमारे भाई कोई भी पुस्तक नहीं छपवाते क्या किया जावे इस विचारमें दैवयोगसे भारतदर्पण यन्त्राधिपति मिलगया इस यन्त्र में सब कर्म्मचारी ब्राह्मण पानीवालाभी भिश्ती नहीं इत्यादि परम सादर से छापकर पूर्ण किया अत्र समस्त धर्म्मावलम्बी इस को कौड़ियोंके मूल्यमें ग्रहण कर मुन्शीजी के परिश्रम को सफलकरें और उत्साह बढ़ावें जिससे ये शेष भूधरविलास कोभी इसी क्रमसे पूर्णकर आपलोगोंके समर्पणकरैं।

पण्डित काशीनाथ शर्म्मा भारतदर्पण यन्त्राध्यक्ष

महल्ला आमिली (दिल्ली)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

निवेदन

विद्वज्जनों को विदितहो कि जैनशतक की काव्योंमें जो ऐसा . चिन्ह देखोगे वह पिङ्गल की रीतिसे जहांजहां वर्ण वा मात्राओं की गिन्ती पर विश्राम है तहां तहां कर दिया है। यह चिन्ह छन्द बांचने में अति सहायक होगा पद वा शब्द वा वाक्य के अनुकूल नहीं किया है जैसा अङ्ग्रेजो में होता है॥

चमनसिंह

भूमिका

श्री वीतरागायनमः

अथ भूधर कृत जैन शतक अर्थप्रकाशिनी टीका प्रारंभः

—:+:—

दोहा छन्द

वन्दू श्री जिन कमलपद; निराधार आधार
भव सागर सों भो प्रभू, कर सम नौका पार १
जिन वाणी वन्दनकरूँ, अति प्रिय बारम्बार
जिन मुजसे निर्बुद्धि को, दिया बुद्धिफलसार २

अब मैं अल्प बुद्धि अवगुणधाम धमनसिंह नाम बिशु सिंहात्मज जैनी अग्रवाल सुनपत नगर निवासी विद्वज्जनों के प्रति निवेदन करता हूं कि मुझ को बाल अवस्था सों अबतक (जो बांवन ५२ वर्ष की आयु भई) भाषाछन्दोबन्ध ग्रन्थों के अवलोकन का अति प्रेम रहा जब मैं ने श्री भूधर दास जैनी खंडेल वाल आगरा नगर निवासी कृत जैन शतक को [जो धर्म नीति में उत्तम वा उत्कृष्ट कविताकर अति प्रिय ग्रन्थ है] देखा और अपने परम दयालु सकलगुण आवास पण्डित ईश्वरचन्द्र दास सुनपत नगर निवासी की सहायता से विचारा तब तत्काल मेरी यह अभिलाषा भई कि इस ग्रन्थकी बाल बोध हेतु शब्दार्थ सरल टीका करदीजिये सो मैंने यह विचार कर केकैएकप्रति भूधर जैनशतक और कतिपय संस्कृत वा भाषा कोश सञ्चय कर देखे। बहुधा शब्दों का निर्णय बुद्धिमानों से कर के अपनी तुच्छ बुद्धि के

ख्य प्रथम शतक को जो लेखकों की अज्ञानता से अशुद्ध होरहा था शुद्ध कर शब्दार्थ वा सरलार्थ टीका प्रत्येक मूल छन्द भूधर कृत के तले लिख कर अर्थप्रकाशिनी नामा टीका बनादई और जो छन्द नाम गण अक्षर मात्राकर बिगड़ रहे थे रूपदीप नाम पिङ्गल की सहायता से ठीक कर दिये

विदित हो कि इस जैन शतक विषे दश प्रकार के सर्व १०७ छन्द हैं जिनके नाम और गिन्ती नीचे लिखी जाती है—

पोमावती छन्द ५ छप्पै १४ मत्तगयन्द २३ घनाक्षरी २३ दोहा २२ सोरठा २ दुर्मिला ४ गीता १ सवैया इकतीसा २ कडषा १

और अनुक्रमणिका पत्र जिस से जैन शतक के सर्व अङ्गों के नाम छन्द संख्या सहित प्रकट होंगे आदि में लिखदई हैं— मेरा विचार था कि श्री भूधर दास जी का कुछ जीवन चरित्र लिखूं परन्तु कुछ हाल मालूम नहीं हो सका श्री पार्श्व पुराण भाषा इनका बनाया हुवा अति सुन्दर कवितापर प्रसिद्ध है—

दोहा छन्द

उन्निस सौ छाबीस पट्, बिक्रम वर्ष प्रवीन
माघ शुक्ल तिथि पञ्चमी, टीका पूरण कीन ३

अब पण्डित जनों से प्रार्थना है कि यदि कहीं शब्द गत वा अर्थ गत दोष अवलोकन करें तो मुझको निपट अनजान जानकर उपहास्य न करें अपनी दयालुता हेतु क्षमा रूप वस्त्र सौं ढांकलें—

दोहा छन्द

है सज्जन प्रति प्रार्थना; जो इस टीका मांह
लखें दोष तो शुध करें; अवगुण पकरें नांह ४

आपकाकृपा पात्र
अमन सिंह

श्री जिनायनमः

भूधर जैन शतक सिखाते

—०:::०—

श्री ऋषभ देव की स्तुति

पोमावती छन्द

—०::—::०—

ज्ञान जिहाज बैठ गणधरसे, गुण पयोधि जिस नांहि तरे हैं। अमर समूह आन अवनी सों; घस घस सीस प्रणाम करे हैं। किधौं भाल कु कर्म की रेखा; दूर करन की बुद्धि धरे हैं। ऐसे आदि नाथ के अहनिशि; हाथ जोर हम पाव परे हैं॥ १॥

शब्दार्थ टीका

(ज्ञान) उत्तम बुद्धि (जिहाज) बोहित अर्थात् बडी नौका जो समुद्र में चलती है (गणधर) मुनि विशेष जो भगवान् की निरक्षर रूप बाणी को सुन कर अक्षर रूप करते हैं (से) जैसे (गुण) सुभाव प्रबोणता (पयोधि) समुद्र (जिस) जिस के (अमर) देवता (समूह) मण्डली (आन) आन कर (अवनी) पृथ्वी (सीस) सिर (प्रणाम) नमस्कार (किधौं) कहीं शायद (भाल) माथा (कुकर्म) खोटे कर्म (रेखा) लकीर (अह) दिन (निश) रात्रि —

सरलार्थ टीका

गणधर जैसे पण्डित मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनः पर्यय ४ । चार ज्ञान के धारी ज्ञान रूप जिहाज में बैठ कर उस के गुण रूप समुद्र को नहीं तिर सके भावार्थ उस के गुणों को नहीं पा सके और देवताओं की मण्डली में जिसके आगे सिर रगड़ रगड़ कर नमस्कार करी है देवता ओंके माथे पर कहीं खोटे कर्म की लकीर बाकी हो जिस के मिटा नें हेतु ऐसी बुद्धि धारण करी है ऐसे कौन आदि नाथ स्वामी जिन के आगे हाथ जोर हम पांय परे हैं—

:—०—०—:

पोमावती छंद

का उत्सर्ग मुद्रा धर बनमैं; ठाडे ऋषभ रिद्धि तज दीनी । निश्चल अङ्ग मेरु है मानौं; दोनों भुजा छोर जिन लीनी । फसे अनन्त जन्तु जग चहला, दुखी देख करुणा चित चीनी । काढ न काज तिन्हैं समरथ प्रभु, किधौं बांह दीरघ यह कीनी ॥ २

शब्दार्थ टीका

(का उत्सर्ग मुद्रा) (काय उत्सर्ग मुद्रा) शरीर छोडना जोग की रीति का नाम (का उत्सर्ग मुद्रा) जोग साधन की एक रीति का नाम है जो योगी पुरुष अपना शरीर स्व स्वभाव पर अर्थात् असली हालत पर छोड़ देते हैं (ठाडे) खड़े हुए (ऋषभ) आदि नाथ स्वामी (ऋद्धि) संपत्ति (तज) छोड (दोनो) दई (निश्चल) नहीं हिलने चलने वाला (अङ्ग) शरीर (मेरु) पहार (मानों) तुल्य (भुजा) बाहु अर्थात् बाजू (अनन्त) जिस का अन्त न हो (जन्तु) जीव (जग) संसार (चहला) कीचड़ (करुणा) दया (चित) मन (समरथ) सामर्थ बलवान् (प्रभु) स्वामी (बांह) भुजा (दीरघ) लम्बी—

सरलार्थ टीका

श्री आदि नाथ स्वामी अपनी संपत्ति राज धन आदि को छोड कायोत्सर्ग मुद्रा धारन कर बन में जा खड़े हुए आपका अचल शरीर मानों पहार है कैसा पहार जिस ने दोनों भुजा छोड लई हों कवि भूधर दास जी नें स्वामी के अचल शरीर दोनों हाथ लटकते हुए को उस पहार से उपमा दई है जिस पहार नें दोनों भुजा छोड दई हों संसार रूप कीचड़ में अनन्त जीव फसे हुए दुःखी देखकार सामर्थ स्वामी नें अपने मन में दया करी उन जीवन को भव रूप कीचड़ से निकाल ने अर्थ कहीं अपने हाथ लंबे करे हैं—यह उत्प्रेक्षा अलङ्कार है

—o····o—

पोमावती छंद

करनों कछू न करते कारज, तातैं पाणि प्र
लम्ब करे हैं। रह्यो न कछु पायन तैं पीवो,
ताही तैं पद नांहि टरे हैं। निरख चुकी नैनन

सब यातैं, नेत्र नासिका अनी धरे हैं। कहासुनै
काननकाननयों, जोग लीन जिन राज खरे हैं॥ ३

शब्दार्थ टीका

(कर) हाथ (कार्य्य) काम (तातं) तिसअर्थ (पाणि) हाथ (प्रलंब
लंबे (पैबो) चलनो (पद) पैर (निरख) देख (नैन) नेत्र (नेत्र) आंख
(नासिका) नांक (अनो) नोक (कानन) कानों में (कहा) क्या (का
नन) बन (लीन) डूबाहुआ अथवा (जिन राज) आदि नाथ स्वामी—

सरलार्थ टीका

हाथ से कछु काम करनो बाकी न था इस कारण हाथ लंबे कर दिये
पांयों से चलना न था इस कारण पांय नहीं डिगे आंखों से सब कुछ देख
चुके थे इस कारण आंखों को नाक की नोक पर लगादई (नाक की नोक
पर दृष्टि डालकर ध्यान लगाना एक रीति जोग की है) कानों से क्या सुनै
कुछ सुना बाकी न था इस कारण आदिनाथ स्वामी जोग मैं लीन होकर
बन मैं ध्यान लगाये खरे हैं—

छप्पै छंद

जयो नाभि भूपाल बाल, सुकुमाल सुलच्छण।
जयो स्वर्ग पाताल, पाल गुणमाल प्रतिच्छण।
दृगविशाल बरभाल, लालनखचरणविरज्जहिं।
रूप रसाल मराल, चाल सुन्दर लख लज्जहिं।
रिपुजालकालरिसहेशहम, फसेजन्मजरवालदह।
यातैंनिकाल बेहालअति, भोदयालदुखटालयह४

शब्दार्थ टीका

(जयो) जैवन्ते अर्थात् फते वाले (नाभि) आदि नाथ स्वामी के पिता का नाम है (भूपाल) राजा (बाल) बालक (सुकुमाल) नरम कोमल (सुलच्चण) भले लच्चण वाला (स्वर्ग) ऊपर का लोक (पाताल) नीचे का लोक (पाल) सीम हद पालने वाला (माल) माला समूह (प्रतच्चण) सनमुख चौडेचपःट जाहर (द्रग) आंख (विशाल) बडा (वर) प्यारा उत्तम (नख) नाखून (चरण) पांय (बिरज्जहिं) शोभित हैं (रूप) मनो मूरत (रसाल) रस भरा (मराल) हंस (लख) देख (लज्जहिं) सुकचें (रिपु) बैरी (काल) मरना (रिसईश) आदि नाथ स्वामी का नाम (जन्म) पेदा होना (जंजाल) कीचड़ काई सिवाल (दह) पानी का गहराव भवर (बेहाल) बुरा हाल (अति) बहुत (भो) अव्यय संबोधन अर्थमें (दयाल) क्रपावन्त—

सरलार्थ टीका

नाभि राजा का बालक कौन श्री आदिनाथ स्वामी जो कोमल और भले लक्षण वाले हैं जेवन्ते रहो और स्वर्ग पाताल लोक के पालने वाले पुनः प्रत्यक्ष गुणों की माला कौन आदि नाथ स्वामी जैवन्ते हो और कैसे हैं आदिनाथ स्वामी बड़ी आंख श्रेष्ट माथे वाले हैं जिन के लाल नाखून चरणों पर शोभायमान हैं रसभरी सूरत है और जिन को सुन्दर चाल देख कर हंस मन में सकुचें हैं भो रिसईश हम अपने वैरी काल रूप जाल और जन्म रूप भवर की कीचड़ में फसे हैं भावार्थ जन्म मरण के दुख भोग रहे हैं इस दुख से अति बुरा हाल है भो दयाल इस से निकाल और ये दुख हमारे दूर कर—

श्री चंद्राप्रभुस्वामी की स्तुति

पोमावति छन्द

चितवत वदन अमलचंद्रोपम ' तजचिन्ताचितहोय
अकामी ॥ त्रिभुवन चन्द्र पाप तप चन्दन ' नमतच
रण चन्द्रादिक नामी ॥ तिहुं जगछई चन्द्रका की
रति ' चिह्नचन्द्र चिन्ततशिवगामी ॥ वन्दूचतुर च
कोर चन्द्रमा ' चन्द्रवरण चन्द्रा प्रभुस्वामी ॥ ५ ॥

शब्दार्थ टीका

(चितवत) ध्यान करना (वदन) मुख (अमल) उजला (चन्द्रोपम) चन्द्रमाको तुल्य (चिन्ताचित) मनको शोच (अकामी) निरिच्छा साधु (त्रिभुवन चन्द्र) तीनलोक की चन्द्रमा (तप) गरमी (नमत) प्रणाम करन (चन्द्रादिकनामी) चांद से आदि लेकर जो जो कीरतिमान हैं (तिहुं) तीन (जग) जगत (छई) छाई-फैली (चन्द्रका) चांदनी (कीरति) यश (चिह्न) चिन्ह निशान (चिन्तत) चितवन करना (शिव) मोक्ष (गामी) चलनेवाला (वन्दू) प्रणाम करूं (चतुर) पण्डित (चकोर) पक्षी विशे जो चन्द्रमापर आशक्त है

सरलार्थ टीका

जिनका उजलामुख चन्द्रवत चितवन करकै मनको निकलता छै निरिच्छक होजा कैसे हैं स्वामी तीन लोक के चन्द्रमा पापरूपगरमी के दू करने के लिये चन्दन हैं जिनके चरणों को चांद से आदि लेकर जो ग्रह नक्षत्र तारा गण हैं तिन को नमस्कार करें हैं तीनों जगत में जिनको यशरूप चांदनी फैली हुई है जिनके चन्द्रमा का चिह्न है जिसको गामी पुरुष चितवन करे हैं चतुर रूप चकोर के चन्द्रमा चंद्रमा कैसा

वर्ण अर्थात् रंग जिनका ऐसे कौन चंद्राभ प्रभु स्वामी तिनको प्रणा म करता हौं

श्री शान्तिनाथ स्वामी की स्तुति

मत्तगयन्द छन्द

शान्ति जनेश जयो जगतेश ह, रैं अघ ताप नि
शेश कि नांई। सेवत पाय सुरासुर आय न, मैं
सिर नाय महीतल तांई। मौलि विषैं मणिनो
ल दिपै प्रभु, के चरणों झलकै वहु झांई। सूं
घन पाय सरोज सुगन्धि कि, धौं चल के अलि
पङ्क्ति आंई॥ ६॥

शब्दार्थ टीका

[शान्ति] शान्तनाथ स्वामी[जनेश]जनोंकामालिक [जगतेश] जगतका मालिक [हरै] दूरकरै (अघ] पाप [ताप]गरमो [निशेश) चंद्रमा [नांई) तुल्य (सेवत) सेवाकरैं [सुर]देवता [असुर] राक्षस [महीतल] भूमि (तांई) तक (मौलि)मुकट (विषैं] बीच (मणिनोल] नीलमः बाहर [दिपै] चमकै (सरोज) कमल (सुगन्धि)सुवास (अलि)भवरा (पङ्क्ती] पांती
मण्डली

सरलार्थ टीका

शान्तिनाथ जनेश्वर जगतके ईश जैवन्ते रहो पापरूप गरमीको चंद्रमा की समान हरेहैं देवता और राचस आकरआप के पैरों को सेवाकरैहैं और धरती तक सिर निवाकर नमस्कार करैहैंआपकेनुकटसें जोनीलम जवाहरचमक रहाहैं उसकाप्रतिबिम्ब जोचरणों परझलकैहै मानों आप की कमल रूप चरणों की सुगन्धलेने को भौंरोंका समूहआईहै...

—०ःःः०—

श्री नेमिनाथ स्वामी की स्तुति

———

घनाक्षरी छन्द

शोभित प्रियंग अंग, देखि दुख होय भंग लाज
त अनंग जैसे, दीप भानु भास तैं। बाल ब्रह्म
चारी उग्र, सेन की कुमारी जादौं, नाथ तैं नि
कारी वार्स, काटो दुखरास तैं। भीम भव का
नन मैं, आनन सहाय स्वामी, अहो नेमिनामी
तक, आयो तुम्हें तासतैं। जैसे कृपाकन्द बन,
जीवन को वन्द छोडि, त्योंहिं दास को खला
स, कीजे भव फांस तैं ॥ ७ ॥

शब्दार्थ टीका

(शोभित) शोभाकारी [प्रियङ्ग)प्यारा अंग (अङ्ग) शरीर (भङ्ग)दूरहोनां टू टनां (लाजत) लजायमान होना (अनङ्ग)कामदेव (दीप]दिवला (भा नु) सूर्य्य [भास] चमक[ब्रह्मचारी) ब्रह्मका विचार करने वाला अर्थात् भ.लवान् [उग्रसेन) राजलजीके पिताकानाम है (कुमारी) पुत्री (जा दोंनाथ) जादों कुल के स्वामी अर्थात् नेमनाथजी महाराज [कादो) कीचड़ (रास)समूंह [भीम) भयानक (आनन आनन्दसहाय) और भ सहाय(अहो)संबोधनार्थ वा बहु हर्ष में वाअदभुत वस्तु निरख कारयह शब्द बोलते है (तक) तककर (रास) समूह (तास) त्रास दुःख (कृपा) दयालुता (कन्द) गांठ-जड़ (दास) सेवग (खलास) छुड़ावो (फांस)कोटा

सरलार्थ टीका

आपका शोभा मान प्रिय अंग देख कर दुःख दूर होजाता है और शोभा कारी शरीरको देख कर कामदेव लजायमान होजाताहैजैसे दि वला सूर्य्य के प्रकाशतें बालअवस्थासे ब्रह्मचारी अर्थात् नेमनाथ स्वामी ने विवाहनहींकरायाराजाउग्रसेनकीपुत्रीकौनराजलजोकोभीजादौंनाथ तैंने भवरूप कीचड़ दुखरासते बाहरनिकाला संसार रूप भयानक वनमें भोस्वामीं मेराऔरकोईसहायकनहींहै अहोनेमनाथस्वामी दुःख कारण तुमेंतककर आयाहूं भो कृपाकन्द आपने जैसे जीवों कोबन्धसे छुड़ाया है ऐसेहो मुझसेवग को संसार रूप कांटेसेछुटावो

पार्श्वनाथ स्वामी की स्तुति

सिंहावलोकन अलङ्कार छप्पैछन्द

जन्म जलधि जलयान, जान जन हंस मानसर।
सर्व इन्द्र मिल आन, आन जिस धरें सीस पर।
पर उपकारी बान, बान उत्थप्य कुनय गण।
गणसरोज बन भान, भान मम मोह तिमरघन।
घन वर्ण देह दुख दाहहर, हर्षत हेत मयूरमन।
मन मतमतंग हरि पास जिन, जिन विसरहु छि
न जगत जन ॥ ८ ॥

शब्दार्थ टीका

(जन्म)उत्पत्ति (जलधि) समुद्र (जलयान) जिहाज (जानजन) ज्ञानवान(मानसर) तालाव विशेष जहां हंस रहते है(सर्व) सारे(इन्द्र) देवतोंकेराजा (आन) आनकर (आन) दुहाईसोगन्द आज्ञा (पर) पराये(उपकारी) भलाकरनेवाले (बान) जहनसुभाव (बान) तीर (उत्थपन) उखेड़नेवाले (कुनय) खोटायुक्ति (गण) समूह (गण) मुनियोंकी मण्डली (सरोज) कमल (भान)सूर्य्य (भान) तोड़ (मम) मेरा (तिमिर) अन्धेरा (घन) समूह(घन) वादल(वर्ण) रग(देह) शरीर(दाह) जलन(हर) हरनेवाले (हरखतहेत) आनन्दअर्थ (मयूर) मोर(मनमथ) कामदेव [मतंग] हाथी (हरि) सिंह(पासजिन) पार्श्वनाथ जिनदेव (जि) जिसे (मविसरहु) मभूलो (छिन) पल (जगतजन) संसारीजीव

सरलार्थ टीका

जन्मरूप समुद्र की पार वास्ते आप जिहाज हो और ज्ञानी पुरुषों रूप हसको आप मानसरोवर हो देवतावों के सारे राजा मिल आन करआपका आज्ञा सिर पर धरैहै आपकासुभाव परायाभला करने काहै और खोटीयुक्तियोंके समूहका उखेड़नकेलिये आपवाधवतहो मुनियोंकी मण्डली कहिये कमलवन तिस्को प्रफुल्लितकरने के वास्ते आपसूर्य्यहो मेरेमोह रूप अन्धेरे के समूह को तोड़ो अर्थात् भिन्नकरो आपकीदेह श्याम बादलवत श्याम वरण है सोदुखखरूप जलनको हरनेवाली मेरेमनरूप मोर के आनन्द के लिये हेतुहै कामदेव हाथी के जीतने को श्री पार्श्वनाथ स्वामी सिंहके समान है अरेसंसारीपुरुषो जिन्हे छिन भर न भूलो

श्री वर्धमान अर्थात् महावीर
स्वामी की स्तुति

दोहा छन्द

दिढ कर्माचल दलन पवि, भवि सरोज रविराय।
कञ्चनछवि करजोर कवि, नमतवीर जिनपाय॥८॥

शब्दार्थ टीका

(दिढ) दृढ अचल(कर्माचल) कर्मोंका(पहाड़(दलन) दोटूक करनेवाले

(पवि) वज्र बिजली(भवि) भलेपुरुष[रविराय] सूर्य,[कंचन] सोना [छवि] शोभा(कवि) कवित्त कर्त्ता [बीरजिन] महावीरस्वामी

सरलार्थ टीका

कर्म्मरूप दृढ पहाड़ के तोड़ने के वास्ते आप वज्र हो और कमलरूप भले पुरुषोंकेलियेसूर्यहो सोने कोसेआपकीशोभा है मैंकवि हाथ जोड़ कर महावीरस्वामी के पायों को नमस्कार करू हों
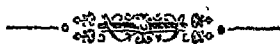
पोमावति छन्द

रहो दूर अन्तर की महिमा, बाह्य गुण वर्णन बल कापै। एक हजार आठ लक्षण तन; तेज कोट रवि किर्ण न तापै। सुरपति सहस आंख अञ्जलि सौं, रूपामृत पीवत नहिँ धापै। तुमबिन कौन समर्थ वीर जिन, जगसौं काढ मोख मैं थापै॥ १०॥

शब्दार्थ टीका

(अन्तर) अंदर (महिमा) बड़ाई (बाह्य) बाहर (कापै)किसपै(लक्षण)चिन्ह(तेज) चमक (कोट) करोड़ (तापै) तिसपर (सुरपति) इंद्र (सहस) हजारअञ्जलीदोनोंहाथोंकेपंजों को आपस में मिलाना ऐसी तरह जिसमेंपानी आदि लेसकते है. [मोख] मोक्ष [थापै] स्थापनकरै.

सरलार्थ टीका

आपकेअंतर की बड़ाईदूर रहो उसका कुछ कथन नहीं केवल बाहरके गुणों के बरणन का भी जोप्रत्यच्छ हैं किस पै बल है भावारथ किसीपै नहीं एकहजार आठशुभ चिन्ह आप के शरीर पर है और क रोड़ रवि को किरणोंका तेज आपके शरीर में है इंद्र हजार आंख की अञ्जली सौंभी आपका रूप अमृत रस पीवताहुआ नहीं धाप ता भोवीर जि न तुम बिन कौन ऐसा सामर्थ है जो हमसे संसारी जीवों कोसंसारसे निकालकर मोच्चमें स्थापन करे

श्री सिद्धों की स्तुति

मत्तगयन्द छन्द

ध्यान हुताशन मैं अरि ईंधन, झोंक दियें। १५
रोक निवारो। शोक हरा भविलोकन कावर,
केवल भान मयूख उघारो। लोक अलोक वि
लोक भये शिव, जन्म जरा मृत पंक पखारो।
सिद्धन थोक बसै शिव लोकति, तीपग धोक त्र
काल हमारो॥ ११॥

शब्दार्थ टीका

(ध्यान) आत्मविचार (हुताशन) अग्नी (अरि) वैरी (रोक) अटका (निवारी) बरजदई अर्थात् रोकदई [शोक] दुख (हरा) दूरकिया (लाकनका) लोगोंका (केवल) ज्ञानविशेष (मयूष) सूर्य को किरण (उचारी) खोली फैलाई (लोक) उर्ध्वलोक मध्यलोक पाताल लोक येतीनों लोक स्थान है (अलोक) जोलोककेगुणसे रहित है (विलोक) देख (शिव) मोक्ष (जन्म) पैदा होना (जरा) बुढ़ापा (मृत) मौत (पंक) कीचड़ (पखारी) धोई (सिद्ध) जिनकी कोई विकार बाकी नहीं रहा मोक्ष में चले गये (थोक) मण्डली (शिवलोक) मोक्ष लोक (धोक) नमना (त्रकाल) तीनोंकाल प्रात मध्य संध्या

सरलार्थ टीका

ध्यानरूप अग्निमें वैरी रूप इन्धन सों कौन इन्द्रियन के सुख जो मोक्ष मार्ग को रोक थे झोक दिये अर्थात् जलादिये दूर करदिये भवि जो वोंके दुख को हर लिया उत्तम केवल ज्ञान रूप सूर्य की किरणों को खोलदिया लोक अलोकको देखकर मोक्षहोगये जन्म जरा मृतरूप कीचड़ को धो दिया सिद्धों का थोक जो शिवलोक में बसेहैं उनको तीन कालहमारीपग धोकहै

मत्तगयन्द छन्द

तीरथ नाथ प्रणाम करें जिन; के गुण वर्णन मैं
बुधि हारी। मोम गयो गल मोष मभारर; हा

तिहिँ व्योम तदाकृत धारी । जन्म गहीर नदी
पति नीर ग; ए तिर तीर भये अविकारी ।
सिद्धन थोक बसै शिव लोक ति, हीं पग धोक
त्रकाल हमारी ॥ १२ ॥

शब्दार्थ टीका

(तीरथनाथ) तीर्थंकर (मोख) छिद्र सांचा (मझार) बिच (तिहि
तिस जगह (व्योम) आकाश थोथ पोल (तदाकृत) तिस रूप (ग
हीर) अथाह गहरा (नदी पति) समुद्र (नीर) जल (तीर)
तट किनरा (अवकारी) विना विकार वा ले

सरलार्थ टीका

सिद्धोंको तीर्थं कर प्रणामकरे हैं तिन केगुणों के वर्णन करने में बुधि
हारगई सांचेका मोमतोगलगया केवल तिस जगह आकाश अर्थात्थो
थ तिसरूप रहगई इस प्रकार सिद्धों का स्वरूप शास्त्रमें कहाहै जलरूप
गहरे समुद्रकी जलकोतिर कर किनारे पहुंचकर अविकारी होगये भा
वार्थ भवरूप समुद्र को तिर मोक्ष चले गये और कोई बिकार बाकीन
हीं रहा सिद्धों का थोक जो शिव लोक में बसे हैं उन सिद्धों को तीन
कालहमारो पगधोक है

श्रीसाधू परमेस्टो को नमस्कार

घनाक्षरी छन्द

शीत ऋतु जोरै तहाँ, सबही सकोरैं अङ्ग, तन
को नमोरैं नदि, धोरै धीर जे खरे। जेठ की
झकोरैं जहाँ, अण्डा चील छोरैं पशु, पक्षी छाँ
ह लोरैं गिर, कोरैं तप वे धरे। घोर घन घो
रैं घटा, चहों ओर डोरैं ज्यौं ज्यौं, चलत हि
लोरैं त्यौं त्यौं, फोरैं बल ये अरे। देह नेह
तोरैं पर, मारथ से प्रीत जोरैं, ऐसे गुरु ओरैं
हम, हाथ अञ्जलि करे॥ १२ ॥

शब्दार्थ टीका

(शीत) जाडा (ऋतु) फसल मौसम समय (जोरैं) जोरपर (सको
रैं) समेटैं (धीर) साहस संतोष (जे) जैसाधू (जेठ) गरीपम
महीनेकानाम (झकोरे) लू - झकाड़ (अण्डाचीलछोरैं) यह बातप्रसिद्धहै
कि अति गरमीमैं चीलअण्डा छोड़ती है (पशू) चतुष्पदजीव (पच्छी) पखेरु
उड़ने वाले जीव (लोरे) चाहैं (गिर) पहाड़ (कोरैं) सिरा प
हाड़ को चोटी (घोर) बड़ा-भयानक (घन) बादल मेघ (घोरैं)
गरजे (चहुओर डोरैं) च्यारों तरफ चलैं (हिलोर) बादल की ल
हर (फोरे बल) बल खोलै अर्थात प्रगट करे (ये) साध (अरे)

अड़े (नेह) राग (परमार्थ] उत्तम कार्य्य (ओरें) दिशा

सरलार्थ टीका

जाड़े की समय में जब सर्व मनुष्य अपने शरीर कोसकोड़ ते हैं साधू जन अपने तनको नही मोड़ते और ऐसो सरदोमे नदीकेतट पर धैर्य्य कीसाथ ध्यानलगाये खड़े है जेठके महीने की लूओमें जब चोल अण्डे छोड़ तीहै और पशु पची जीव सब छाह की चाह नां कर ते हैं ऐसी गरमी में ये साधू पहाड़ की चोटी पर तप रहे हैं भयानक बादल गरजे और चारों ओर घटा चले ज्यों ज्यों बादल की लहर उठैहै त्यों त्यों ये साधू अपने धीर्य्य के बल को खोल कर सन्मुख अड़े हुवे हैं डिग मिगाते नहीं हैं देह केस्नेह को तोड़ ते हैं और परमार्थ से प्रीत जोड़ते हैं ऐसे साधू गुरों की ओर हम हाथ जोड़ते हैं

श्री जिन-बाणी को नमस्कार

मत्तगयंद छंद

वीर हिमाचल तैं निकसी गुरु, गौत्तम के मुख
कुण्ड ढरी है। मोह महाचल भेद चली जग,
की जड़तातप दूर करी है। ज्ञान पयोनिधि
माँह रली बहु, भङ्ग तरङ्गन सूं उछली है। ता

शुचि सारद गङ्ग नदी प्रति; मैं अञ्जली निज
सीस धरो है ॥ १४ ॥

शब्दार्थ टीका

(वीर) महावीर स्वामी (हिमोचल) हिमाला पहार (गौत्तम) एकमुनि का नाम है जो महावीर स्वामी के गणधर थे (मोह) चाहत (महा चल) बड़ा परवत (भेद) छेद भिन्न अर्थात् जुदा करना (जड़ता तप) मूर्खता रूप-तप (पयो निधि) समुद्र (बहु) बहुत (भङ्ग) तोड़ने वाली (तरंग) लहर (ता) तिस (शुचि) पवित्र (सारद) वाणी (प्रति) तुल्य नकल

सरलार्थ टीका

जिन वाणी गंगा नदी के तुल्य है अर्थात् बरा बर है जैसे गंगा जी हिमाचल परवत से निकसी है ऐसे जिन वाणी महा वीर स्वामीसेखिरी है जैसे गंगा जी गऊ मुख कुण्ड मैं ढली है ऐसेजिन वाणी गौत्तम रिषिके मुखमैं आई है अर्थात् गौतम मुनिने उस वाणी को अक्षर रूपवनाकार शास्त्र रचे जैसे गंगाजी पहाड़ों को तोड़ कार चली है ऐसे जिन वाणी मोहरूप बड़े पहाड़ को तोड़ चलो है जैसे गंगाजीने गरमी दूर करी है ऐसे जिन वाणी ने संसार की मूर्खता रूप गरमी दूरकरी है जैसे गंगाजी समुद्र मे मिल. है ऐसे जिन वाणी ज्ञान रूप समुद्रमे मिली है जैसे अंगाजीमैलहर मारती हैं जिनवाणीमे सप्त भंग वाणी कीलहर मारती है तिस पवित्र जिन वाणी गगा नदी के प्रतिको

मैं नैअंजली अपने सेस पर धरी है अर्थात् प्रणाम करे है

मत्त गयन्द छंद

या जग मन्दि· मै अनिवार अ' ज्ञान अन्धेर छ
यो अतिभारी । श्री जिनकी धुनिदीप शिखाशु
चि' जो नहिँ होय प्रकाशनहारी । तौ किसभां
ति पदारथ पांतिक' हां लहते रहते अविचारी
। याविध सन्त कहैं धन है धन' हैं जिन वैन
बडे उपकारी ॥ १५ ॥

शब्दार्थ टीका

(मन्दिर) घर (अनिवार) नहीं दूरहोने वाला (धुनि) शब्द (दो पशिखा) दियेकी ली (प्रकाशनहारो) उजाला करने वा ली (भांति) राति (पदार्थ) बस्तू (पांति) पङ्कति (लहते) देखते (अवि चारी) बिना बिचार वाला (धन्यहै) यह शब्द अति आनन्दमें अद्भुत बस्तु देख कर दूसरे के प्रति बोलाकर ते है (वैन) बचन (उपकारी) सहायक

सरलार्थ टीका

इससंसार रूप घरमें अति भारी अज्ञान रूप अन्धेर छा गया था ओजि

न देव कीधुनि रूप दिये की पवित्रकी जोप्रकाश माननहीं होती तो किस प्रकार वस्तु की पांति की देखते अर्थात् वस्तु का स्वरूप किस तरह जानते अविचारी रहते इस कारण साधूकहैहैं धन्यहैधन्यहै जैनवचन वडे सहायक हैं

श्रीजिनवाणी औरपरवाणीअन्तरदृष्टान्त

घनाक्षरी छंद

कैसेकर केतकी क, नेर एक कहि जाय, आक
दूध गायदूध' अन्तर घनेर है। पीरो होत रिरी
पै न' रीस करै कञ्चन की; कहां काग वाणी
कहां; कोयलको टेर है। कहां भान भारो क
हां' आगिया विचारो कहां' पूनोको उजारो क
हां' मावस अन्धेर है। पक्ष तज पारखी नि; हा
रनैक नीके कर; जैनवैन और वैन' इतनो ही
फेर है॥ १६॥

शब्दार्थ टीका

केतको) एक अति सुगंधित फूल का नाम है (कनेर)एक वृक्ष का

नामहै जिस के फूलमें सुगन्धि नहीं होती और महादेव पर चढ़ा ते हैं (आक) अर्क (घनेर) बहुत (रिरी) पीतल (टेर) शब्द—अवाज़ (भारो) भारी (अगिया) पटवीजना (पूनों) शुक्ल पक्ष की १५ (मावस) कृष्णपक्ष की १५ (पक्ष) पक्ष (पारखो) परखनेवाले (नेक) थोड़ीदेर ज़रा (नीकेकर) भलेकर

सरलार्थ टीका

केतगी और कनेर कैसे कर एक कही जाय आक दूध और गाय दूधमें बड़ा अंतर है यदि पीतलपीरी होतीहै पर कंचन की रीस नहींकरसकती कहां काग की बान कहां कोयल की टेर कहां सूर्य्य अतिप्रकाशमान कहांबिचारापटबिजना कहांपूनोंकाउजियालाकहांमावसकाअंधेरा बड़ाअंतर है हेपरखनेवाले पक्ष छोड़कर थोड़ीवार ध्यान करदेख जैन वचन औरपर मत के वचन में इतनों ही फेर है जैसे ऊपरकहाहै

—०:::०—

घनाक्षरी छन्द

कब ग्रह वाससौं' दासहोय वनमे उ' वेऊँनि
ज रूपरोकूँ' गतिमन करी को। रहिहौं अ
डोल एक' आसन अचल अँग' सहीहों प
रिषाशीत' घामं मेघ भरी को। सारंगसमाज
खाज' कबधौं खुजावै आन; ध्यानदल जोर
जीतूँ; सेनामोहि अरीको। एकल विहारीय

या ;जात्तलिंगधारीकबह्वोऊँ इच्छाचारी वलहारी
वाहघरीको ॥ १७ ॥

शब्दार्थ टीका

(ग्रह) घर (वास) बसना (वेउं) देखों (निजरूप) अपनारूप(गति) चाल (करी) हाथी (अडोल) नहीं फिर ने वा ला (सहिहीं)उठा ऊं-सहुं-परिखा कष्ट (शे त) जाडा (घाम)गरमीं (मेघ भारी) बरषा (सारंग- समाज) हिरनोंकी डार (कबधों) किससमय (आन) आन कर (दल) सैना (जोर) जोड़ कर (सैना) बल फौज(एकल विहा री) अकेले चलनेवाले (यथाजाति लिंग धारो) जन्म समय का चिह्न धारने वाला अर्थात् जैसा मनुष्य के पास जन्म काल में वस्त्र आदिप रिग्रहनथाकेवलनग्नथा (इच्छा चारी) मनोवत गामी बन्ध रहित (ब लिहारो)सदकै क़ुरवान वार।

सरलार्थ टीका

ज्ञानी पुरुष ऐसोभावना मनमें धारण करते हैं कि कब ऐसा समय हो गा कि मैं घर के रहनेसे उदास होकरबनमेंरहों गा और अपने निजस्व रूपको देखोंगा वा विचारू गा और मन रूप हाथी को चाल को कब रोकों गा भावार्थ मनस्थिर करू गा औरकब ऐसा समय होगा के मैं अडोल एक आसन.अचल अंग होकर जाड़े गरमीं वर्षाऋतु की परीषह के दु:ख सहन करू गा और कबऐसासमयहोगाकिहिरणोंकीडारमेरे ए क आसन अचल अंगको लकड़ी का ठूठ वा बोटासमझकर अपनाशरी

र खुजावे गी और मैं ध्यान रूप सेना का संग्रह कर के मोह रूप बैरी की फ़ौज को जो तोंगा और कब ऐसा समय होय गा कि अकेला विहार करों गा और जिन चिह्नों को ले के माताकेपेट से उत्पन्नहुवाथा वही चिन्ह धारण करूंगा अर्थात्नगनहूंगा औरकब इच्छा चारी होंगा उस वरीके वारी जाइयेकब ऐसासमय आवे गा जैसा ऊपर कहा है

राग वैराग अन्तर कथन

घनाक्षरी छंद

राग उदै भोग भाव, लागत सुहावने से, विना राग ऐसे लागैं; जैसे नाग कारे हैं। रागही सो पागरहे; तनमैं सदीवजीव' राग गए आव तगिलानि होतन्यारे हैं। रागहोसे जगरीति; झूठो सब साच जाने, राग मिटै सूझत असार खेल सारे हैं। रागी वीतरागी के विचार मैं बडो है भेद, जैसे भटा पच काज, काज को बवारे हैं ॥ १८ ॥

भाषार्थ टीका

(राग) मोह (उदे] प्रकाश (भोग) विलास सुख (भाव) चोच ला मनकी मौज (सुहावने) भले (पाग) मिलना (गिलानि) नफरत (न्यारे) जुदे कमजोर (असरा) अच्छा बुरा (रागी) लालची (वीत रागी) राग द्वेष रहित त्यागी (भेद) अंतर फरक (भट्टा) बैंगन शाक [पथ] हासिल (काज) किसीको (बयारे) बाय कारनेवाले

सरलार्थ टीका

मोह के उत्पन्न होनेपर सारेभोग विलास चोचले प्यारे मालूम हो ते हैं और जबमोह नहीं रहा तो यही भोग विलास चोचले ऐसे बुरेलगतेहैं जैसेकालेसर्पमोहके कारण जीव शरीर में मिलकर रहताहै और अबमोह जातारहा जीव को शरीर से उलटोगिलानोआतो है औरशरीर छुड़ कर न्यारा हो जा ता है और राग के कारण संसारकी झूठी रीति को साचीमानेहैं रागदूरहोनेपरसंसारकेसारेखेलतमाशेकचेथोथे दिखाईदेतेहैं इस कारण रागी और वैरागी पुरुष के विचार में बड़ा ही अन्तर है जैसे वैगन शाक किसो कोपथ्यहै औरकिसोकोबायलहै कि सो कवि का वाक्य है (किसीको वैगनबायलाकिसीको होवे पथ)

भोग निषेध कथन

मत्तगयंद छंद

तू नित चाहत भोग नए नर, पूरब पुन्य बिना किम पैहै। कर्म संजोग मिलै कहिँ जोगग, है जब रोग न भोग सकै है। जो दिन चारकव्यों तब न्यो कहिँ, तो परि दुर्गति में पछतै है। यां हित यार सलाह यही कि ग, ई कर जाहि नि बाह न ह्वै है॥ १९॥

शब्दार्थ टीका

[नित] सदैव (पूरब) पह ले (किमपैहै) कैसे पावैहै (संजोग) मेल (जोग) कारण (गई) पकरे (व्योंत) दब (पछतै है) पछतावे है (यार) मित्र (सलाह) मशवरा सम्मती (गईकर जाह) जोवस्तु हाथ से जाती रही (निबाहन ह्वै है) साधन होयहै

सरलार्थ टीका

हेनर तू सदैव नए नए भोग विलास कीभावना करैहै परन्तु पहले पुण्य बिना कैसे भोग भोग सकेगा यद्यपि कर्म के संजोग से कहीं भोग भोग ने का जोग मिलभी जा वे तो रोग पकड़ ने पर फिर नहीं भोग सका यदि फिर भी कहीं च्यार दिन भोग भोग भो लिये तो दुर्गति में पड़ कर पछता वे गा इसकारण हेमित्र यहीसलाहहै कि जो वस्तुहाथ सेगई उसकानिबाह अर्थात् साथ नहीं हो सका भावारथ भोग भोगनां अपने बसका नहीं है इससे आनन्दको छोड़ तूनहीं निबाह सकेगा भावार्थ तेरा इसका साथ नहीं बनेगा

देहनिरूपणकथन अर्थात् देहकी निर्गुणता
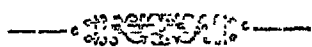
मत्त गयन्द छंद

मात पिता रज वीरज सौं उप, जी सबसात कु
धात भरी है। माखिन की पर माफिक बाहर,
चाम कि वेठन वेठ धरी है। नातर आय लगें
अबही बगु, वायस जीव बचै न घरी है। देह
दशा यहि दीखत भ्रात, घिनात नहीं किन बु
द्धि हरी है॥ २०॥

शब्दार्थ टीका

(रज) लहू (वीरज) धातु मनी (उपजी) पैदा हुई सातकुधात) हाड १ मांस२ लहू ३ चाम ४ मज्जा चरबी ०५ भेद नस ०६ वीर्य ०७ (माखिन) मक्खिया मक्खिका [माफक] तुल्य (वेठन) लत्ता या वेठन वन्धेज (वेठ) लपेट [नातर) नहींतो (बगु) बगला पक्षी(बा यस) काग पक्षी (दशा) अवस्था [भ्राता] भाई

सरलार्थ टीका

माता केलहू और पिता के वीर्य से पैदा हुई और सात कुधातसे भरी

है और मांखियों के पर के माफक पतले चाम की बस्ते से लपेटधरी है नहीं तो अभी बगुले और काका इस देहको आकर चिमट जाते हैं जीव घरी भरकी नहीं बचता हैभाई जब देह की यह दशा जो ऊपर कही दिखाई देती है तौ इस पर भी तू घिन नहीं मानता तेरी किसने बुद्धी हरी है

—०॥०—

संसारदशा निरूपणकथन

घनाक्षरी छंद

काउ घर पुत्र जायो, काउ के बियोग आयो,
काउ राग रङ्ग काउ रोआ रोई करी है। जहां
भान उगत उ, छाह गीत गान देखे, सांझ स
मे तहां थान, हाय हाय परी है। ऐसी जग री
त को बि, लोक के न भीत होय, हा हा नर
मूढ तेरी कौन मति हरी है। मानुष जनम पा
य, सोवत बिहाना जाय, खोवत करो रन कि
एक एक घरी है॥ २१॥

शब्दार्थ टीका

[काउ) किसी (जायो) पैदा हुवा (बियोग) बिछोआ आपदा (उ

कानी कौडी विषै सुख, भव दुख करज अपार ।
बिन दीये नहीं छूटते; ले भज्ञ दाम उधार ॥२४॥

शब्दार्थ टीका

(बिषय सुख) इन्द्रियों के सुख (करज) कर्ज [अपार] बहुत)लेश
का) किञ्चित मात्र थोड़े से भी

सरलार्थ टीका

इन्द्रियों के सुख कानी कौड़ी के तुल्य तुच्छ हैं ऐसे सुखों के वा स्ते
भव दुख जो भारी करज है अपने सिर कर लिया क्या तू नहीं जानतारें
थोड़े से दाम उधारे लियेभी नहीं छूट ते फिर इतनां भारी करज क्यों
सिर धरे है यह क्योंकर उतरे गा

मित्र उपदेश कथन

छप्पै छन्द

दस दिन बिषै बिनोद, फेर बहु बिपत परम्पार ।
अशुच गेह यह देह, नेह जानत न आप जर ।
मित्र बन्धु सनबन्धि, और पर जन जे अङ्गी ।

अरे अन्ध सनबन्धि, जान स्वारथ के सङ्गी।
परहितअकाजअपनोनकर, मूढराजअबसमझउर।
तज लोक लाज निज काज को, आज दावहै कहत गुर ॥ २५ ॥

शब्दार्थ टीका

(विषै) इन्द्रियों के भोग [विनोद) आनन्द (विपत] दुःख (परम पर] अति (अशुच) अशुद्ध [गेह] घर (नेह) प्रीति (जर) मूर्ख (बन्धु) भाई (सन्बन्धि) सनबन्धि। सुतअरु लक (पर जन जे अङ्ग]पर लोग जो अपने शरीर से मिलाप रखते है जैसे नाते दार (स्वारथ) अपने प्रयो जन (संगी] साथी (पर] पराये [हित) भले कारण [अकाज) तुच्छकाम निकम्मा काम [मूढराज) बड़े मूर्ख [दाव) काल समय और यह शब्द जुवारियों की संज्ञामें बोलते है

सरलार्थ टीका

दशदिन अर्थात् थोड़े दिन इन् द्रियों के भोग का आनन्द है फिर व ही बड़ादुख है यहशरीर अशुचीका घर है परन्तु मूर्ख मोहके कारण नहींजानता मित्र वा भाई वा संबन्धी और पर जन जो अपने नाते दारहैअरेअंधसारेसंघो मित्रादिको अपने प्रयोजन का साथी समझते रे कोई काम नहो आनेका पराये भले के वास्ते अपना काम मत बि गारे हेमूर्ख अब समझ कर उर अपने भलेके वास्ते लोगों की लाजको छोड़ दे आज काल अर्थात् समय है ऐसा गुरू कह ते है
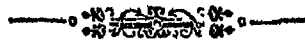
घनाक्षरी छन्द

जौ लौं देह तेरी काउ, रोग सैं न घेरी जौलौं;
जरा नांह नेरी जासौं, पराधीन परि है । जौ
लौं जम नामा बैरी; देय न दमामा जौलौं, मा
नै आन रामा बुद्धि, जाय न बिगरि है । तौलौं
मित्र मेरे निज, कारज सम्हार लीजै; पौरुप थ
कैंगे फिर, पाछै काहा करि है । अहो आग आ
वै जब झोंपरी जरन लागै, कूआ कै खुदाये त
व, कौन काज सरि है ॥ २६ ॥

शब्दार्थ टीका

(जौलौं) जबतक (जरा) बुढ़ापा (नेरो) नजीक (पराधीन) पर
वश (दमामां) नगारा ढोल (रामा) स्त्री। (तौलौं) तबतक (पौरु
ष) पराक्रम

सरलार्थ टीका

जबतक तेराशरीर किसीरोगनेमहींघेरा।बुढ़ापानिकट नहीं आया जिस से
परवश हो कर पड़े और जबतक यम राज आकर अपना ढोल नबजा
वे अर्थात् मौत न आवे अथवा स्त्री जब तक तेरा ज्ञान या काम नमाने
और बुद्धीबिगरे नहीं तब तक मित्र अपने काम समार लीजिये परा

कम सिथल हुवे पर पीछे क्या करि ये आग सेजव झोंपड़ी जरन लागे उस वाक्त कूवा खुदा येवे क्या प्रयोजन सिद्ध होगा

घनाक्षरी छंद

सौ बरष आयु ताका, लेखा कर देखा सब, आधोतो अकारथ हि, सोवत विहाय रे। आधीमैं अनेक रोग, बाल वृद्ध दशा योग, औरहुँ संजोग केते, ऐसे बीत जाँय रे। बाको अब कहा रही, ताही तूं बिचार सही, कारज की बात यही, नीको मन लाय रे। खातिर मैं आवेतो खलासी कर हाल नहीं, काल घाल परै है अचान कही आय रे॥ २७॥

शब्दार्थ टीका

(आयु] उमर (लेखा) हिसाब (अकारथ] वृथा (विहायरे) व्यतीत होय [अनेक) बहुप्रकार (बीत] गुजर (नीको) भली (खातिर) मन [खलासी) छुटकारा (हाल) अब (काल) मौत (घाल) एक प्रकार की जादू की मार

सरलार्थ टीका

सौ बरस की उमर का साराहिसाब कर देखा आधो तो वृथा सोवते

व्यतीत होय है और व्याधि में यालक बुढ़ापे कारण अनेक रोग होजा ते है इनके सिवाय और जितने संजोग ऐसे होतेहैं जिनसे नाना प्रका र के रोग होजाते हैं सांकोशव का रहो तिस ही से विचारले काम की बात यही आछी अपने मनमें जान तेरे मनले आवे तो तुरतही अ भीछुट कारा करले नहींतो काल की चाल अचानक आन परे गी फिर कुछ नहीं बने गा
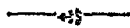
घनाक्षरी छंद

बालपने बाल रह्यो, पाछै गृह भार भयो, लो
क लाज काज बांधो, पापन को ढेर है। आप
नो अकाज कीनो, लोकन में यश लीनो, पर
भो विसार दीनो, विषै विष जे रहै। ऐसे हि ग
ई बिहाय, अलप सी रही आय, नर पर जाय
यह; आन्धे की बटेर है। आयेशित भैया अब, का
ल है अवैया इम; जानी रे, सियाने तेरे, अजौं
भी अन्धेर है ॥ २८ ॥

शब्दार्थ टीका

(बालपने) बालक अवस्था में (बाल) बालक [पर भौ) पर लोक (विसार) छोड़ना (वश) वश (जेर) नीचा (विहाय) व्यतीत

(अलप) थोड़ी (परयाय) अकार [अन्धे कौबटेर) अन्धे कौबटेर प्र सिद्ध वाक्य है बटेर एक पक्षी का नाम है जो अति चंचल होता है जो सुलाखे पुरुष के हाथ नहीं आता तो अंधे के हाथ आनो अति कठिन है ऐसेही मनुष्य शरीर कापानां कठिन है (श्वेत) सुपेद (भवैया) आ नेवाला (हम) यह (रेख्याने) अरेबुद्धिमान (अभीं) अब तक

सरलार्थ टीका

अन्धेपन में बालक रहा। फिर घर के काम हों गये लोग लाज के पुर्थ पापों का ढेरबाधा अपनां काम बिगारा लोगों में वाह वाह कराईपर भो को बिसार दिया और विषय वश होकर नींचा हो गया ऐसेही बी तगई थोड़ी सी आ रही नर देह यह अन्धेकेहाथकीबटेरहै भावार्थ नरदे ह बड़ी कठिनतासे प्राप्त होती है भैया अब सुपेद बाल आगये कालआ ने वाला है यहबात हम जान गये किरेबुद्धिमान तेरे अभीं भी अन्धेरहै अर्थात् कुछनहीं बिचारता

—❋—

मत्तगयंद छं

बाल पनै नसँभाल सक्यो कछु, जानत नांहिहि

ताहित हो को। योवन बैस बसी बनिता उर,

कै नित राग रह्यो लछमी को। यों पन दोयवि

गोय दिये नर; डारत क्यों नरकैं निज जी को।

आयहि श्वेत अभीं सठ चेत; गई सु गई अबरा

ख रही को ॥ २८ ॥

शब्दार्थ टीका

(हित) प्यार भलाई (अहित) वैर बुराई (यौवन) जवानी (वैस) उमर (बनता) स्त्री (उर) हृदा (राग) मोह (अकसो) अ ग्मी (पन) समय (बिगोदिये) खोदिये

सरलार्थ टीका

बालक अवस्थामें तो कछु संभाल नहीं सका और भलाई बुराई को भी नहीं जाना जवानी समय में स्त्री हृदय में बसी या सदा द्रव्य का मोह रहा इस प्रकार दो पन एक बाल पन दुसरा यौवन पन खोय कर निज जो को क्यों नरक में डाले है सुपेद बाल आगये अब भी मूर्ख चेतले गई सोगई अब रही को सभाल

घनाक्षरी छन्द

सार नरदेह सब, कारज को जोग येह, यही तो विख्यात बात, वेदन में बचै है। ता में तरुणा ई धर्म, सेवन को समै भाई, सेये तूनै विषै जै से, माखो मधुर ले है। मोह मद भोरा धन' रामा हित जोरा अब' योंहि दिन खोय खाय, को दों जिम मचै है। अरे सुन बौरे अब, आये सी

सधोरेअभों'सावधानहोरेनर,नरकसोंबचैहै॥३०॥

शब्दार्थ टीका

सार) गूदा (विख्यात) प्रत्यक्ष (तरुणाई) जवानी (मधु) सह त (रचैहै) मनलगावैहै (मद) फूल का रस [भौंरा) अलि (रा मा) स्त्री (कोदो) एकतरह का धान जिसके खानेसे कुछनशाहोजा ताहै (मचै है) माचे है (वौरे) बावले (सावधाम) एकचित्त हो वियार

सरलार्थ टीका

नर देह जगत में सार है किस कारण के सारे उत्तम काम इसनरदेहमें बनते हैं यह बात प्रत्यक्ष वेदों में वांचो जाती है इस मांह जवानी की अवस्था धरम सेवन को समय है औरतैंने इस अवस्थामें विषय से येजै से मांखी सहत में राच रही है मोह रूपमद का भौंरा हुवा और स्त्री भित धन जोड़ा इस प्रकार दिनों को खोय कर कोंदों धान के समान माचे है अरे बावले सुन अब सिर पर सुपेद बाल आगये अर्थात् का लका काल आगया अब साव धान हो हेनर नरकसों बचै है

मत्तगयन्द छन्द

बायलगीकिबलायलगीमद, मत्तभयो नर भूतलग्यो हो ।
वृद्धभयेनभजेभगवान 'वि' षेविषखात अघातनक्यो हो ।

सीसभयोबुगलासमशेत र' होडरअन्तर श्याम अभों ही ।
मानुषभोमुक्ताफलहारग' वारतगाहित तोरतयों ही॥३१॥

शब्दार्थ टीका

[(वाय) वायु हवा (मदे) मदरा (मत्त) मस्त (अंघात) धाप ता (श्याम) काला (भो) भव जन्म (मुक्ताफल) मोती (गंवार मूर्ख (तगा) तागा

सरलार्थ टीका

हवा लगी था कोई बलाय लगी अर्थात् चिमट गई वा मदिरा पा न कार के मस्त हो गया याभूत चिमटगया जोतू ने बूढा होकर भी भ गवान नभजे और विषय भोग ता हुवा धापता नहीं है सीस तेराबुग ले की समान सुफैद हो गया परन्तु हृदय में कालश अब तक बाकी रही मानुष जन्म मोतियोका हार है हे गवार तागे के वास्ते भावार्थ इन्द्रियों के सुख के लिये तूवथा इसमोतियो के हारको तोड़ता है

संसारी जीव चितवन कथन

मत्त गयन्द छंद

चाहत है धन होय किसी विध' तो सब काज सरें

य राजी। गेह चुनाय करूँ गहना कछु' व्याह सुतासुत
बांटिय भाजी। चिन्तत यों दिनजात चले यम, आय अ
चानक देत धक्का जो। खेलत खेल खिलार गए रह'जा
य रुपी शत रञ्जकिबाजी॥ ३२॥

शब्दार्थ टीका

(सरैं) पूरे हों (जियराजो) जीवके (गेह) घर (सुता) बेटी [सुत]
बेटा (चिन्तत) सोचते हुवे (यम] यमराज (खिलार) खेलने
वाले (रुपी) ठहरी रही कायम रही (बाजी खेल

सरलार्थ टीका

संसारी जीव ऐसाचितवनकरते हैं कि किसी बिध धन होय जो जीवके
सारे काम पूरे हों जैसे घर चुनावों कुछ गहना बनावों बेटेऔर बेटो के
विवाह को भाइयों मे भाजी बांटों ऐसा सोचते दिन चले जाते हैं यम
राज अचानक आनकर धक्कादेता है भावार्थ मोत आजातोहै खेलखेल
तेहुवे खिलारो उठ गये परन्तु शतरंजको बाजी बदस्तूर कायम रहीभा
वार्थ संसारी लोग चल ते हुवे परन्तु संसार के काम इसीप्रकारबनेरहे

मत्तगयन्द छन्द

तेज तुरङ्ग सुरङ्ग भिले रथ' मत्त मतङ्ग उतङ्ग खरे ही।
दासखवास अवास अटाधन, जोरकरोरन कोशभरेही।

ऐसभये तु काहाभयु हैनर, छोड चले जब अन्त छरेही।
धामखरेरहि काम परेरहि दामगरेरहि ठामधरेहो॥३३॥

शब्दार्थ टीका

(तेज) चालाक (तुरंग) घोड़ा (सुरंग) भला रंगीन (मस्त) मस्त (मतंग) हाथी (उतंग] ऊंचा (दास) सेवक गुलाम (खवास) खासनौकर (अवास] मकान [अटा) अटारी (कोश) खजाना (छरे) अकेले (धाम) मकान (गरे) गढे (ठाम) स्थान

सरलार्थ टीका

तेजघोड़े भले रंग के रथरुचे मस्त हाथी खड़े हैं दास अर्थात् बांदे खवास अर्थात् खास नौकर मकान अटारी धन जोड़कर करोरों खजाने भरे हैंहेनर यद्यपि ऐसे भयेतो क्याहुवाजब अन्तकाल में सबको छोड़कर अकेले चल दिये मकामखरेरहिकाम सारे परेरहि दामइसो स्थानधरेरहिवा गडेरहि

अभिमान निषेध वरणन

घनाक्षरी छन्द

कञ्चन भण्डार भरे, मोतिन के पुञ्जपरे, घने

लोग द्वार खरे, मारग निहारते। यान चढे डो
लते हिं; झीने स्वर बोलतेहिं, काउकी तो ओ
र नेक; नीके न चितारते। कौलौं धन खांगे
तेउ, कहै तो न जांगे तेउ, फिरैं पाय नांगे कां
गे, पर पग झारते। एते पै अयानागर; भानार
हा बिभोपाय, धृग है समझ तेउ, धर्मना संभा
रते॥ ३८ ॥

शब्दार्थ टीका

(कंचन) सोना (भंडार) कुठियार (पुंज) समूह ढेर (द्वार) द
रवाजा (मारग) रस्ता (निहारते] देखते (यान) सवारी [झी
ने) हलके मुलायम (नेक) तिनकभी (नीके) भलेप्रकार (चिता
रते] चितवनकरते (कौलौं) कबतक [तेउ) तेपुरुष (पायनांगे)
नांगे पाव [कांगे) कगले (एतेपै] इतने पर (अयाना] भोला
अनजान (गरभाना) मानवाला (बिभो] संपत्ति

सरलार्थ टीका

सोनेके कुठियार भरे और मोतियों के ढेर परे बहुतसेमनुष्य द्वारे खरे र
स्ता देखते सवारी पर चढे हुवे फिरते धीमे बोल बोलते किसीकी ओर
तिनकभी भलेप्रकार न चितवन करते कब तक धनपांगे धन निबर जा
गा फिर ऐसी गति होगी कि कोईनामभी उनका नलेगा और पराये पै
र झाड़ते फिरैंगे इतने पर अज्ञान संपत्ति पाकर मान वालारहा तिस

मनुष्योंकी समझपर धिक्कार है कि धर्म्म को नहीं सम्भालते हैं

घनाक्षरी छंद

देखो भर योवन मैं, पुत्रको वियोग भयो, तैसे हि निहारी निज, नारी काल मग मैं। जेते पुन्यवान जीव, दीखते थे यानही पै, रङ्कभये फिरें तेउ, पनहि न पग मैं। एतेपै अभाग धन, जीतवसों धरे राग, होय न वैराग जाने, रहूँगो अलग मैं। आंखन सों देख अन्ध, सूसे को अन्धेरी धरै; ऐसे राज रोग को इ, लाज कहा जग मैं॥ ३५॥

शब्दार्थ टीका

(भरयोवन) ऐन जवानीं (वियोग) मरना (निहारी) देखो (मग) मारग (यान) सवारी (रंक) मोहताज (पनही] जूतो [अभाग) बेनसीब (सूसेकोअधेरोधरे) सूसेकी अन्धेरों धरना यह प्रसिद्ध है सूसा एक पशु का नाम है जोजङ्गल मैं रहता है उसका यह सुभावहै कि जब अहेरी को अपने निकट आता हुवा देखता है मारे डरके अपनीआंख मींच ली ता है

भावार्थ टीका

देखो जैन जवानी में बेटा मर गया तैसे ही अपनी स्त्री मौत मारग मैं देखो जो जो पुण्य वान सवारी पर चढे दिखाई दे ते थे मोहताज हुवे फिरें हैं पैर में जूता नहीं इतनी ही तुच्छ बात पर जीव धन और जीतवसे मोह करे है बैराग नहीं होता और यह जानता है कि मैं पाप से अलग रहुंगा अपनी आंखों से यह अवस्था देख कर जूकं सूझे को सो अंधेरी धरता है भावार्थ जान बूझ कर अन्धा बने है ऐसे बड़े रोग का जग में क्या इलाज है

दोहा छन्द

जैन वचन अञ्जन बटी, आंज सु गुरु प्रवीन ।
रागतिमरतवहुनमिटै, बडोरोगलखलीन ॥ २६ ॥

शब्दार्थटीका

(बटी) गोली (परवीन] चतुर (तिमर) अंधेरा (तवहुन) तबभी

सरलार्थ टीका

जैन वचन अञ्जन की गोली हैं जिस्को गुरु चतर आंजते हैं तिस पर भी राग रूप तिमर दूर नहीं होतो बड़ो भारी रोग जानों

निज अवस्था वर्णन

घनाक्षरी छंद

जोई दिन कटै सोई, आयु मैं अवश्य घटै, बूंद
बूंद बीतै जैसे, अञ्जलि को जल है। देह नित
झीन होय, नैन तेज हीन होय, योबन मलीन
होय, छीन होय बल है। आवै जरा नेरी ताकै,
अन्तक अहेरी आय, परभौनजीक जाय, नरभोनि
फल है। मिलकै मिलापीजन, पूछत कुशल मे
री, ऐसीहोदशा मैं मित्र; काहेकोकुशलहै॥२७॥

शब्दार्थ टीका

[छिन) पल (अवश्य) निश्चय (झीन) दुबली (छीन) कमती (ने री) नजीक (अंतक) मौत (अहेरी) शिकारी (कुशल) भलाईखै रियत

सरलार्थ टीका

जो पल कटै है सो उमर में निश्चय घटै है वून्द२ को तुल्य बदीत होय है जैसे अंजली को जल शरीर नित दुबला होय है आंखों का तेज ही न होय है योवन मैला होय है और बल कमती होय है अब बुढ़ापा नजीक आवेहै कालका शिकारी तेरे पर ताक लगा वे है परभव नजी कहोय है नर भव निष्फल जायहै मिल ने वाले जीव मिलकर खैरियत

पूछैं हैं सो हे मित्र ऐसी अवस्था में जोजपरवश्यम करी काहेकी खेरि यतहै

वृद्ध दशा कथन

मत्तगयंद छंद

दृष्टि घटी पलटी तन की छबि, बङ्कभई गतिल
ङ्कनई है। रूस रही परनी धरनीअति,रङ्कभयो
परयङ्क लई है। कम्पत नार बहै मुख लार, म
हामति सङ्गत छाड़ गई है। अङ्ग उपङ्ग पुरान
भये तिश, ना उर और नवीन भई है ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ टीका

(दृष्टि) नजर (छवि) रूप (बङ्क) बांकी (गति) चाल (लङ्क) कमर (भई) बाँको टेढो (परनी) व्याहीहुई (धरनी) स्त्री (अति) बहुत (रङ्क) मोहताज (परयङ्क)] सेज खाट (नार) गरदन (लार) राल (महामत) उत्तम बुद्धि (संगत) साथ (अंग) श रीरके बड़े टुकड़े जैसे हाथ पैर (उपङ्ग) शरीर के छोटे टुकड़े जैसेच गुली नख आदि (तिसना) तृष्णा चाहत (उर) हृदा (नवीन)नई

सरलार्थ टीका

नजर घटगई शरीर की छवि अर्थात् रोनक जाती रही चाल बांकीहो गई कमर टेढी होगई घरकी ब्याही खोफसरहो हर तरह से मोहता जहोकर खाट ले बई नाड़ कांपने लगी मुख से राल टपकने लगी उ त्तम बुद्धि ने साथ छोड़ दिया जितने शरीर के अंग उपांग थे सो सारेपु रा भी होगये परन्तु तृष्णा और नवीन पैदाहोगई

घनाक्षरी छन्द

रूपको न खोज रह्यो, तरुज्यों तुषार दह्यो' भ
यो पतझार किधौं, रह्योडार सूनी सी। कूबरीभ
ई है कटि; दूबरी भई है देह; ऊबर इतेक आ
यु, सेर मांह पूनीसी। योवन नें बिदा लीनी,
जरा नें जुहार कीनी, हीन भई सुद्धि बुद्ध, सबी
बात ऊनी सी। तेज घट्यो तावघट्यो, जीतब
सौं चाव घट्यो' और सब घटे एक तिष्णा दिनदू
नीसी ॥ ३९ ॥

शब्दार्थ टीका

(खोज] निशान (तरु) वृक्ष (तुषार) पाला (दह्यो) जलाया (डार) डालो शाखा (सूनी] खाली (कूबरी) कुबड़ी (कटि]

कमर [दूबरी] दुबली क्षय (उबरो) बाकी [इतैक) इतनीव (
पूनो) रूईकी बनती है सूत कातने को (बिदा) रुखसत (जरा]
बुढ़ापा [जुहार) राम राम सलाम (उनोसी) उन्नीस कमती
(दिन दूनोसो) दिनबदिन अधिक

सरलार्थ टीका

रूप का न खोज रहा शरीर ऐसा होगया जैसा पाले माराहुआ पतझर होकर सूनां हो जावे कमर झुकड़ी होगई देह दुबलो हो गई इतनीं बाकी रहगई जितनीं सेर मांह पूनो जवानीं ने बिदा लीनीं बुडापे ने राम राम आकरी शुद्ध बुद्धी जातो रही सबी बात उन्नीसहोगई अर्थात् घट गई तेज घट गया ताब घट गया जीवन का चाव घट गया इसीप्रकार और सबबात घटी परन्तु तृष्णा छिन दुगनो होगई

घनाक्षरी छन्द

अहो इन आपके अ; भाग उदै नांह जानों, वी
तराग बानो सार, दयारस भीनी है। योवनके
जोर थिर; जङ्गम अनेक जीव, जानजे सताये'
कहीं करुणा न कीनी है। तेई अब जीव रास
आये पर लोक पास' लेंगे बैर देंगे दुख, भईना
नवीनी है। उनही के भयकाभ, रोसा जानकां
पतहै'याहीडरडोकराने' लाठीहाथलींनी है॥४०॥

शब्दार्थ टीका

(भोनी) भरीहुई मिली हुई (थिर) स्थावर जीव अचर (जंगम] चलनेवाले जीव चर (रास) समूह (भईना) हुईनां (नवोनी) न यात (डोकरा) बूढा

सरलार्थ टीका

इस मनुष्यने अपने अभाग के उदय से यह नहीं जाणी कि जिन वाणी सार दया रस भरीहुई है योवन के जोर सैं चरा चर जीव जान कर स ताये दया करी नहीं सो जीव रास परलोक पास आने पर तेरेसेवे रले गे और दुःख देंगे यह बात नवीन नहीं है सदीव से चली आती है सताया हुवा समय पाकर बदला लेता हैं उन सतायेहुवे जीवों के भय का भरोसा जान कर कांपता है डरता है इस कारण बूढेने लाठीहा थलई है प्राय: बूढे पुरुष लाठीहाथ में ले ते है

—०❀❀०—

घनाक्षरी छन्द

जाको इन्द्र चाहैं अह' मिन्द्र से उमां है जासों
जीव मोक्ष मांहि जाय' भोमल बहावे है। ऐसो
नर जन्म पाय' विषै बश खोयखाय' जैसे कांच
सांटै मूढ' मानक गमावे है। मायानदि बूडभी
जा' कायावल तेज छीजा' आयामन तीजा अब

कहावनआवै है। तातैं निज सीस ढोलैं, नीचै नैन कीये डोलैं' कहाबड बोलैं वृध; वदन दुरा वै है ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ टीका

[इन्द्र) देवतावोंकाराजा (अहमिन्द्र) नें राजा नवदिश और पांचपं चोंस्वर्गों के देवता अहमिन्द्र कहाते हैं यहांबड़ाई छुटाई नहीं हैं सब स मान हैं (उमाहैं) उमंग करे (भो] संसार (मल) मैल (सांटे) बदले (मोणक) चुन्नी मणि विशेष [गमावे) खोवे [माया) मोह (बूड़) डूब [कहा) क्या (तातैं) तिस कारण (ढोलै) नीचा करे (दुरावै है) छुड़ावे है

सरलार्थ टीका

जिस नर जनमको इन्द्र चाहैंऔरअहमिन्द्रवेजाकी उमंग करेहै औरजि सकेज.वमोक्ष मांह जाकर ससार रूप मैल को वहाता है ऐसे नर ज नमको विषय वश होकर खोय खाय दिया जैसे कांच के बदले मैं चुन्नी मणिको देता है भावार्थ नरजनमको जो मणि के तुल्य है विषय वास नामैं जो कॉच तुल्य है बदल कर खोवैहै मोह रूप नदी मैं डूब भी जा और कायाकाबल वा तेज घटगया तीसरा समय बुढ़ापेका आग या अबक्या बनआवैहै तिस बुढापेसे निज सीसझुके है और आंख नी चो करेहै और क्याबड़ा बोल बोल सकतेहैं बुढ़ापाशरीर को छिपा वे हैं

मत्त गयन्द छंद

देखहु जोर जरा भटको यम' राज महीपतिके अ गवानी। उज्जल केश निशान धरे बहु' रोगनको सँग फौज पलानी। काय पुरी तज भाग चलोजि स' आवत योवन भूप गुमानी। लूट लई नगरी सगरी दिन; दोयमखोयहिनाम निशानी ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ टीका

(देखहु] देखो (भट) शूर वीर (महीपति) राजा (अगवानी) आगे चलने वाला (उज्जलकेश) सुपेद वाल (निशान) झंडा(पला नी) पेलदई (काय) शरीर (पुरी) नगरी (भूप) राजा (गुमा नी) मान वाला

सरलार्थ टीका

बुढापेके शूर बीर यम राजाकेअगवानी केवल को देखो सुपेद वालों के झंडे लेकर बहुत सेरोगों की फौज अपने साथ में पेल दई योवनरू प राजा जो अभिमानी था तिस्के आने पर काय पुरी नगरी छोड़ कर भाग चला सारो नगरी दिन दोय में लूट कर नाम निशानी खोद ई भावार्थ शरीर जा ता रहा

दोहा छन्द

सुमति छोर योवन समै' सेवत विषै विकार।
खल साँटे नहिँ खोइये' जन्म जवाहर सार॥४३॥

शब्दार्थ टीका

[सुमति) उतम बुद्धि (विषय) इन्द्रियोंके सुख (विकार) खोट (खल] खलो अर्थात् तिल वा सरसोंका फोका जो तेल निकालने के पीछे रह जाता है (सांटे) बदले (सार) गूदा अर्थात् खली वा फोकका विरुद्ध शब्द है

सरलार्थ टीका

योवन समय में सुमति को छोड़ कर विषय विकार की सेवा मत कर खलिके बदलेमें जन्म रूप सार जवाहर अर्थात् मणिको मत खोवे

कर्तव्य शिक्षा कथन

घनाक्षरी छन्द

देव गुरु साचे मान' साचो धर्म हिये आन' सा
चोहि बखान सुन' साचे पन्थ आव रे। जीवन
की दया पाल, झूट तज चोरी टाल; देख न
बिरानी बाल' तिशना घटाव रे। अपनी बडा

ई पर' निन्दा मत करै भाई, यही चतुराई म
द, मास को बचाव रे । साथ षट कर्म साधु,
सङ्गत मैं बैठ जीव' जो है धर्म साधन को, तेरे
चित चाव रे ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ टीका

(हिये) हृदा (बखान) बचन (पन्थ) रस्ता (बाल) स्त्री (नि
न्दा) पीठ पीछे बुराई करनो (मद) मद्रा (षटकर्म्म) छः कर्म्म जो
जैनो को कर ने योग्य है सिझाय अर्थात् सामा यक विशेष १तप२ जि
न देव की पूजा ३ संयम अर्थात् ब्रत नेम कर इन्द्रि यों का रोकनो ४
गुरु भक्ति ५ दान ६ (चाव) उमंग

सरलार्थ टीका

देव और गुरू जो सा चे हैं तिनको मान और जो साचा धर्म्म है तिस्को
हृदय में धारण कर और साचोही बचन सुन और सचेही रस्तेआव
जीवों की दया पाल झूठ को तज चोरी को टाल परस्त्री को देखमत
तृष्णा को घटा अपनी बड़ाई पराई बुराई मतकर यही चतुराई है कि
मद मांस का बंचाव कर और पूर्वोक्त षट कर्म्म जोजै नी को करनेयो
ग्यहैं उनका साधन कर और जो धर्म्म साधन का तेरे चित में चाव है
तो साधु संगत मैंबैठ

घनाक्षरी छन्द

साचो देव सोई जा मैं, दोश को न लेश कोई,
वाहि गुरु साचे उर, काउ की न चाहहै । स
ही धर्म वही जहाँ, करुणा प्रधान कही, ग्रन्थते
ई आदि अन्त, एकसो निवाह है । यही जग र
त्न चार, इनही को परख यार, साचे लेउ झूठे
डार, नरभो का लाहा है । मनुष विवेक बिना
पशु की,समान गिना, तातैं यही ठीक बात,
पारनी सलाह है ॥ ४५ ॥

शब्दार्थ टीका

(लेश) लगाव (करुणा) दया (प्रधान) बड़ा (ग्रन्थ) शास्त्र (रत्नचार) देव १ गुरु २ धर्म ३ शास्त्र ४ (लाहा) लाभ (विवेक) बिचार [सलाह] भलाई सम्मति मशवरा

सरलार्थ टीका

वही देव साचे हैं जिन में कोई प्रकार के दोष का लगावनहीं है और गुरू वही सांचेहैंजिन् के मन में किसीका मोह नहीं है और धर्म वही शुद्धहै जिस में दया प्रधान मानीहै और शास्त्र वही ठीक है जहांआदिसे ले कर अंत तक एक सानिवाह है कहीं बिरोधीबचननहीं संसारमें यही चार रत्न हैं हेमित्र इन ही की परिक्षा सच्चा ग्रहण करभा

ठे को छोड़ नरभो का यही लाभ है मनुष्य विचार बिना पशु को तुल्य माना गया है इस लिये यही बात ठीक पारनी अर्थात् भले प्रकारजा त करनी योग्य है

देव लक्षण मत बिरोध निराकरण

छप्पै छन्द

जो जग वस्तु समस्त, हस्त तल जेम निहारैं ।
जग जन को संसार, सिन्धु के पार उतारैं ।
आदि अन्त अविरोधि, वचन सबको सुखदानी ।
गुणअनन्त जिस माँहि, रोगकी नहीं निशानी ।
माधो महेश ब्रह्मा किधौं, वर्धमान के बौद्धयह ।
येचिहनजानजाकेचरण,नमोनमोमुझदेववह।४६।

शब्दार्थ टीका

वस्तु) पदार्थ (समस्त) सर्व (हस्त तल) हथे ली (जेम) जिम जैसे (निहारैं) देखैं (सिन्धु) समुद्र (अविरोध, विरोधरहित (माधो) विष्णु (महेश) शिव (वर्द्ध मान) महावीर (बौद्ध) बौद्धअवतार (नमो) नमस्कार

सरलार्थ टीका

सरलार्थ टीका

जिनको सारे पदार्थ संसार के हस्त की रेखा जैसे दिखाई देते हैं और संसारी जीवों को संसार समुद्र से पार उतारते हैं जिनके अविरोधी वचनआदि अन्त सबको सुख दाता है और जिस मांह अनन्त गुण है काउप्रकार के दोष का चिह्न नहीं है ब्रह्मा विष्णु महेश महावीर वा बौद्ध कोई होय जिसमें येलक्षण हों उस के चरणों को नमस्कार करूं वह देवहै

यज्ञ विषैं जीव होम निषेध

घनाक्षरी छन्द

कहैं पशु दीन सुन, यज्ञ के करैया मोहि, होमत हुताशन में, कौनसी बडाई है। स्वर्गसुख मैं न चहूँ, देउ मुझे यों न कहूँ, घास खायरहूँ मेरे, यही मन भाई है। जो तू यही जानत है वेद यों बखानत है, यज्ञ जलो जीव पावै, स्वर्ग सुखदाई है। डारै क्यों न वीर यामैं, अपने कुटम्बही को, मोहि क्यों जारै जगत, ईश की दुहाई है ॥ ४७ ॥

शब्दार्थ टीका

(दीन) गरीब (यज्ञ) जोमन (होमत) आग में डालना (कुटम्ब (कुगबा (जगतईश) परमेश्वर (दुहाई) फरियाद

सरलार्थ टीका

गरीब पशु ऐसा कहतेहैं कि हे यज्ञ के करता सुन मुझे अगनीमें डालने में कौनसोवडाई है स्वर्ग का सुख मैं नहीं चाहता कुछ मुझे दो ऐसानहीं कहता घास खा कर रहताहों यही मेरे मनमें आई है.जो तू ऐसा जानता है के वेद ऐसा कहै है कि यज्ञ जला जोव स्वर्गसुख टाता पाता है तो हे भाई जिसनें अपने कुटम्ब ही को क्यों नहीं डालता मुझे क्यों जलो वेहै दुहाई परमेश्वर को

सातोंबारगर्भितषटकर्मउपदेश

छप्पै छन्द

अध अन्धेर आदित्य, नित्य सिज्झाय करीजै।
सोमायम संसार ताप, हर तप कर लौ जै।
जिन वर पूजा नेम, करो नित मङ्गल दायन।
बुध संयम आदिरो' धरो चित श्रीगुरु पायन।

निजवितसमानअभिमानबिन,सुकरसुपचहिदानकर।
योंसनिसुधर्मषटकर्मभण, नरभोलाहालेउनर ॥४८॥

शब्दार्थ टीका

(आदित्य)१सूर्य्य (नित) सदीव (सिज्झाय) सामायक विशेष (सोमाय)२सोमअर्थ अर्थात् येशीतल (ताप) गरमी (हर) हरने वाला (वर) श्रेष्ट (मङ्गल)३आनन्द (दायन) देनेवाला (बुद्ध)४ पण्डित (संयम) इन्द्रियों का रोकनां (आदरों) आदर सनमान से (गुरु] ५शिक्षक (वित) धन (सुकर)६करने योग (सुपच) पचने योग (सनि)७सुनले (षटकर्म्म) छ कर्म जो ऊपर कहे और आवक को कर ने योग्य है (भण) कहे सातो वार के नाम .जन पर अङ्क कर दिये हैं जान लेनां

सरलार्थ टीका

पापरूप अन्धेरे के दूर करने को सूर्य्य के तुल्य जो सिज्झाय सामा यक है सो नित करये और ससार रूप गरमीं के दूर करने वाला जो शीत ल तप है सोकरये और जिन वर पूजा करने का नित्य नेम करो कैसो है जिन वर पूजा मङ्गल को दाता है और भीवुद्ध आदर सनमान से सं यम धारणकरो और श्रीगुरु के चरणों मैं चितधरो और अपने धन समा न मान छोड़ कर कर ने का पच ने योग्य जो दान है सो दो इसप्रकार जोसुधर्म छ: कर्म कहे ते सुन और नर भोलाभ ग्रहण कर

——※——

दोहा छन्द

येही छह विधि कर्म भज, सात विसन तज वीर।
इस ही पैंडे पहुँचिये, क्रमक्रम भवजलतीर ॥ ४९ ॥

शब्दार्थ टीका

(भज) स्मरण कर (विसन) पाप [वीर] भाई (पैंडे) रस्ते (क्रम क्रम) सहज [तीर] किनारे

सरलार्थ टीका

ये छः कर्म जो ऊपर कहे स्मरण कर और सात विसन अर्थात् पाप जो नीचे कहे जाते हैं हे भाई छोड़ इस रस्ते सहज सहज संसार रूप जल के किनारे पर पहुंच जायगा भावार्थ संसार रूप समुद्र को पार कर देगा अर्थात् मोक्ष गामी होगा

सप्तव्यसनकथन

जूवाखेलन१ मांस२ मद३, वेश्या विसन४ शिकार५।
चोरी६ पर रमणी रमण७, सातों पाप निवार ॥ ५० ॥

शब्दार्थ टीका

[मद] मदिरा [वेश्या) वेसवा रण्डीबाजी (पररमणी) परस्त्री (रमण)

भोगकरनां (निवार) छोड़

सरलार्थ टीका

जूवाखेलना मांस खाना मदरा पोनो वेसवा रखनीं शिकार खेलना चोरी करनां परस्त्री से भोग करनां ये सातों बिसन छोड़
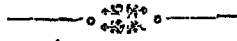
जूवानिषेध कथन

छप्पै छन्द

सकल पाप संकेत, आपदा हेत कुलच्छण ।
कलहखेत दारिद्र' देत दीखत निज अच्छण ।
गुण समेत यशशेत, केत रवि रोकत जैसे ।
औगुण निकर निकेत, लखलित बुधजन ऐसे ।
जूवासमान इसलोकमें, और अनीतनपेखिये ।
इसबिसनरायकेखेलको;कौतकहूंनहिँदेखिये५१

शब्दार्थ टीका

(सकल) सब (संकेत) सैन इशारा अवधि (आपदा) बिपत (कुलच्छन) खोटे लच्छण (कलह) झगड़ा (खेत) खेत - गेह (दारिद्र] कंगला पन (अच्छण] अक्षण - आंख (समेत) सहित

[यश) जस (श्वेत) उज्वल (केत) नवग्रह (निकर) समूह-बहुत (निकेत) घर (वुधजन) पण्डित (लोक) संसार (अनीति) अं न्याय (पेषये] देखिये (विसनराय] पापोंका राजा (कौतक) त मांशा

सरलार्थ टीका

सारे पापों को अवधी विपत का कारण झगड़े आस्थान कंगले पनका देने वाला येसारी बात अपनीं आँखों से दिखाई देतीं हैं जैसे केतु सूर्य को गुण और उज्वल यश समेत रोके है ऐसे इस जूवे को अवगुणों के स मूह का घर पण्डित लोग देखें हैं जूवे के तुल्य इस लोक में और कोई अन्याय न देखिये इस पापों के राजा के खेल का तमाशा भी देखना उचित नहीं है

मांस निषेध कथन
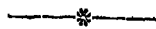
छप्पै छन्द

जङ्गम जी को नास, होय तब मांस कहावै ।
सपरश आकृत नाम, गन्ध उर घिन उपजावै ।
नरक योग निरदई; खांह नर नीच अधरमी ।
नामलेत तजदेत' अशन उत्तम कुल करमी ।

यह अशुचमूलसवतैं बुरो' क्रमकुलरासनिवांसनित।
आमिष अभच्छ इसके सदा' वरजो दोष दयालचित ५२

शब्दार्थ टीका

(सपरश) छूना (आकृत) रूप आकार (गन्ध) दुर्गन्ध (उर] हृदा (घिन) नफरत (असन) भोजन (अशुचमूल) अशुद्धताकीजड़ (क्रम) कांड़ा (रास) समूह (निवास) स्थान (आमिष) मास (अभच्छ] नहीं खाने योग

सरलार्थ टीका

पर जीवों का नास होय जब मास कहाता है इस काछूना और रूपऔर नाम हृदे में गिलानी पैदा कर ता है नरक के योग निरदई नोच अधर्मी लोग इसे खाते है और उत्तम कुल सुकर्मी पुरुष जिस का नाम सुनकर भोजन खानां छोड़ देते हैं यह अशुद्धता की जड़ सारो वस्तुवों से बुरी कोड़ों के कुलके समूह का घर सो मांस अभच्छहै हेदयालु चित इस के दोष सदीव वरजो रोको

मदिरा निषेधकथन

दुर्मिला छन्द

क्रमरासकुबाससरापदहै; शुचितासब छूवत जात सही।

जिसपानकियेसुधिजायहिये; जननीजनजानतनारयही ।
मदरासमऔरनिषेधकहा; यहजान भले कुलमें न गही ।
धिकहैउनकोवहजीवजलो' जिनमूढनकेमतलीनकही।५३।

शब्दार्थ टीका

(सरापद) सिरसे पैरतक (शुचिता] पवित्रता (पान) पीना (ज ननी] माता [जन) मनुष [नार) स्त्री (निषेध) खोटा [गही) ग्रहण करो (लीन) भखो

सरलार्थ टीका

मदरा सिरसे पैर तक कीड़ोंकी रास और दुर्गन्ध हैं जिसके पीनेसेहृदे की शुद्धिता जाती रहती है और मदरा पीने वाला पुरुष मस्त होकर माता को अपनीं स्त्री जान लेता है मदरा कीतुल्य और क्याखोटो वस्तु है ऐसा जान कर मदरा भले कुलमें ग्रहण नहीं करो उनपुरुषों कोधि क्कार है और वह जीव जलो जिन मूर्खों के मत में लीन मानो है ।

वेश्यानिषेध कथन

दुमिला छन्द

धनकारणपापनिप्रीतकरै; नहि तोरत नेह यथातिनको ।

खवचाखतलोचनकेसु हको; शुचितासवजायछुयेजिनको।
मदमांसबजारनिखांयसदा; अन्धलेविसनोनकरेंघिनको।
गणिकासंगजेसठलीनभये;धिकहैधिकहैधिकहैतिनको।५४

शब्दार्थ टीका

[पापनि] कसबी-रण्डी (यथा) जैसा (तिन) तिनका (बजारनि) बाजारी-रण्डी कोठेमें बैठने वाली (अधले) अन्धे (घिसनो) पापो (गणिका) कसबी (लीन) आसक्त।

सरलार्थ टीका

धन के कारण रण्डी प्रीति करती है नहीं तो प्रीति को ऐसा तोड़ डालती है जैसे तृण को तोड़ते हैं और नीच पुरुषों के ओष्टों को चाखती है जिस कसबी के छूने से सारी पवित्रता जाती रहती है मदिरा मांस बजारनी नित्य खाती हैं फिरभी अन्धे पापी घिन नहीं करते गणिका सङ्ग में मूर्ख आसक्त होगये उन को बार बार धिक्कार है।

———०:०:०———

आखेटनिषेधकथन

———०:०:०———

घनाक्षरी छन्द

कानन में बसे ऐसी, आनन गरीबजीव, प्राननसों

प्यार प्रान, पूंजी जिन पास है। कायर सुभावध
रै, कासों दीन द्रोह करै, सबही सौं डरै दांत,
लिये तिन रहेहै। काहु सों न रोष पुनि, काहुपै
न पोष चाहै, काहुकी परोष पर, दोष नाधरैहै।
नेक स्वाद सारवे को, ऐसी मृगोमारवेको, हाहा
रे कठोर तेरो, कैसे कर वहैहै ॥ ५५ ॥

शब्दार्थ टीका

(कानन) वन (आनन) और न कोई (प्रान) जीव (पूंजी) जमां सरमाया (कायर) डरपोक (द्रोह) वैर (दांत मैं तिन लेना) अति दीनता करनो आर्य्यखण्ड में रीति है कि अति दीनता समय तृण दांत में लेते हैं (रोष) रञ्ज गुस्सा (पुनि) फिर (पोष) पालन (परोष) ऐब-कुवचन [दोष] अपराध (नेक) थोड़े (स्वाद) मजे-जायके (सा रवेको) पूराधरने को [मृगी] हिरनी (वहै) चले ।

सरलार्थ टीका

वन में बसती है और कोई ऐसा गरीब जीव नहीं है केवल अपने प्रा णों से प्यार है और प्राणही की पूंजी जिस के पास है और कुछ माल नहीं डर पोक सुभाव धरे है किसी से गरीब देष नहीं करती सबही से डर तीहै दांत में तृण लिये हुवे है किसीसे रञ्जनहीं और किसी से अपना पालन नहीं चाहती किसी के खोटे वचन पर दोष नहीं धरती थोड़े से स्वाद के वास्ते ऐसीमृगि (जिसकी अवस्था ऊपर कह आये हैं) मार ने अरथ हा हारे कठोर तेरो कैसे हाथ चले है

चोरीनिषेधकथन

छप्पै छन्द

चिन्तातजै न चोर, रहत चौंकायल सारै।
पीड़ैं धनी विलोक, लोक निर्दै मिल मारै।
प्रजा पालकार कोप; तोप पर रोप उठावै।
मरै महादुख देख, अन्त नीची गति पावै।
बहुविपतमूलचोरीविसन,अघटचासत्रावैनजर।
परवितअदत्तअङ्गारगिन,नीतनिपुणपरसैनकर।५६।

शब्दार्थ टीका

(चिन्ता) शोच (चौंकायल) चुकना झिझकना (पीड़ैं) दुखदैं (प्रजा पाल) राजा (कोप) क्रोध (रोप) खड़ाकर (त्रास) दुख (पर वित) परायाधन (अदत्त] विन दियाहुवा (अंगार) आगका पिण्ड (नीति निपुण) नीति चातुर नीति ज्ञाता (परसे) छुवे (कर] हाथ

सरलार्थ टीका

चोर के मन से कभी चिन्ता नहीं जाती सब जगह चौकन्ना रहता है और धन वाले देख कर दुख देते हैं और निर्दई पुरुष मिल कर

मारें हैं प्रजा पालक क्रोधित होकर तोप पर खड़ा कर उड़ावे है यो र महा दुख देख कर मर ता है और अन्त में नीची गति पाता है चो री बिसन बहु आपतों को जड़ है जिस के दोष प्रगट दिखाई देते हैं पर धन चुराये हुवे धनको अङ्गार समान नीति निपुण पुरुष हाथ से नहीं छूते

परस्त्री निषेधकथन
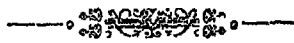
छप्पै छन्द

कुगति बहन गुण दहन, दहन दावानलसो है।
सुयश चन्द्र घन घटा, देह कृशकारन छई है।
धनसर सोखन धूप, धरम दिन सांझ समानी।
विपत भुजङ्ग निवास, बाँबई वेद बखानी।
एहिविधअनेकऔगुणभरी, प्रानहरनफाँसोप्रबल।
मतकरहुमित्रयहजानकर,परबनतासोंप्रीतपल ५७।

शब्दार्थ टीका

(कुगति] खोटी गति (बहन) जोजो (गहन) गहना (दहन) जलाने वाली (दव) वनको आग [अनल) आग (दवानल) जो आगबुझाई नहीं बुझती [कृश) दुबलो (सर)तालाब (सोखन)

सोषने वालो (भुजङ्ग) सरप (निवास) स्थान (प्रबल बलवान (प रबनता) परस्त्री

सरलार्थ टीका

परस्त्री कुगति की बहन और गुणांकी हरने वाली और जलाने कोऐ सी है जैसी बन को आग सुयश रूप चन्द्र मां की देह क्षय करने वा स्ते घन घटा के तुल्य है धन रूप तलाव के सोखने के वास्ते धूप सम है धर्म रूपदिन के वास्ते सांझ काल को बरोबर हैं विपत रूप सरपकी बांवई शास्त्र ने कही है इस प्रकार अनेक प्रकार की औगुण भरी प्राण हर ने वाली वल वान फांसी है हे मित्र ऐसा जान कर पर स्त्री से ए कपल प्रीत मत कर

स्त्रीत्याग प्रशंसाकथन

दुमिला छन्द

दिव दीपक लोय बनी बनता, जड़ जीव पतङ्ग
जहां परते। दुख पावत प्रान गमावत हैं; बर
जे नर हैं हटसों जरते। इमआंन विचक्षण अ
क्षण के,बस होय अनीत नहीं करते। परती ल
ख जे धरती निरखैं, धन हैं धन हैं धन हैं न
र ते ॥ ५८ ॥

शब्दार्थ टीका

दिव) प्रकाशित रोशन (बरजै) रोके (विचक्षण) चतुर (श्रव ख] आंख (अनीत) अन्याय (तो) स्त्री (निरखे) देखे

सरलार्थ टीका

परस्त्री प्रकाश सांन दिपले की लोय के तुल्य है मूर्ख जीव जो पतङ्ग के तुल्यहैं उस पर पड़ते हैं और दुख पाते हैं प्राण खोते हैं हट कर के जलते हैं रोक ने से नहीं रुकते इस प्रकार चतुर मनुष्य आंखों के वशही करअन्याय नहीं करते जे पुरुष पर तो अर्थात् पर स्त्री देख कर धरती निरखेहैं उन् पुरुषों को धन्य है २

—※—

दुमिला छन्द

दिढ शील शिरोमणि कारज मैं, जगमैं यश आरज तेहि लहैं। तिन के युग लोचन बारिजहैं' इस भाँत अचारज आप कहैं। पर कामनि को मुखचन्दचितैं' मुदजाय सदा यह टेव गहैं। धन जीवन है तिन जीवन को, धनमांय उनैं उर मांझचहैं ॥ ५९ ॥

शब्दार्थ टीका

[दिढ) मजबूत (शील) अच्छा चलन (शिरो मणि) उत्तम-प्रधान

(भारज) श्रेष्ट उत्तम (युग लोचन] दोनों आंख [वारिज] कमल (अघोरज) आचार्य शास्त्र वक्ता गुरू (चितैं) देखे (टेव) सुभाव (जीवन) जीना (जोवन) जीवों को (माय) माता (उर) पेट (साक्ष) मध्य

सरलार्थ टीका

जो पुरुष शील सैं (जो शिरोमणि कारण है) मज बूत है संसार मैं ते पुरुष उत्तम यश लेते है तिन पुर्षों को दो नों आंख मांनों कमल है ऐसा आचार्य कहते हैं परस्त्री का चन्द्र वत् मुख चितवन करने पर सदा मुन्द जांय हैं ऐसा सुभाव है ऐसे जोवों का जीवनो धन्य है औरउन माता वों को धन्य है जो ऐसे पुरुषो को पेटमें रखने की इच्छा करैं है

कुशील निन्दाकथन

मत्त गयन्द छंद

जो पर नार निहार निलज्ज हँ, सैं विहसैं बुध
हीन बडेरे । झूटन की जिम पातल पेख खु'शी
उर कूकर होत घनेरे । जो जन की यह टेव न
है तिन, को इस भो अप कीरति है रे । ह्वै प
र लोक विषे बिजली सुक' रे शतखण्ड सुखाच

लसै रे ॥ ६० ॥

शब्दार्थ टीका

निलज्ज) वेशर्म (विलसै) आनन्द करै (झूठन) झूठ (पातल) पत्तल जो पत्ते की बना ते है (कूकर) कुत्ता (जे जन) जिनमनुष्यों की (टेववहै) सुभाव होय (अप कीरतो) अपयश (ह्वै) होय (शत) सौ १०० (खण्ड) टुकड़े (सुखाचल) सुख का पहाड़

सरलार्थ टीका

जो पुरुष पर स्त्री को देख नलजा वैं और हसैं आनन्द करै सो पुरुष बड़े बुद्धि हीन है और ऐसे जानि जाति हैं जैसे झूठ को पत्तलोंको देख कुत्ते अपने मनमैं आनन्द होतिहैं जिन पुरुषों का ऐसा सहजहै तिनको इस जन्म में अप यश है पर स्त्री पर परलोक में विजलो समान है सौ सुखरूप पहार के सौ १०० टुकड़े करै है

—०❁❁०—

एक एक बिसन सेवनसों नष्टभये

तिनके नाम

———०❁०———

प्रथम पांडवा भूप' खेल जूआ सब खोयो ।
मांस खाय बकराय' पाय बिपता बहु रोयो
बिन जाने मदपान' योग जादोंगण दज्झे ।
चारदत्त दुख सहे; वेसवा बिसन अरुज्झे ।

नृप ब्रह्मदत्त आखेटसों' द्विज शिवभूत अदत्तरति।
पररमणिराचरावणगयो'सातोंसेवतकौनगति ॥६१॥

शब्दार्थ टीका

[पाँडवा भूप) पाँडव राजा [वकराय) राजा वक (जादोंगण) जादोंकुल के लोग (दज्झे) जले (चारदत्त) नाम (अरुझे) अलझे (ब्रह्मदत्त) राज का नाम (आखेट) शिकार (द्विज) ब्राह्मण (शिवभूत) ब्राह्मण का नाम (अदत्त) चोरी का धन (रति) रचाहुआ (पररमणि) परस्त्री (रावण) लङ्कापुरी के राजा का नाम।

सरलार्थ टीका

पहले पाँडव राजा नें जूआ खेलकर सारी संपति अपनी खोदई-मांसके कारण राजा वक दुख पाकर बहुतसा रोया जादोंकुलके लोग विनजाने मदिरा पोनेसे जले चारदत्तने वेशवा विसन अलझनेसे दुःख उठाये राजा ब्रह्मदत्त शिकार खेलनेसों और शिवभूत ब्राह्मण चोरोके धन मैं रचनेसों और रावण लङ्का का राजा सीतानाम परस्त्री मैं रचनेसे जातिभये अर्थात् नष्ट भये और जो पुरुष सातों विसन सेवते हैं उनकी कौनगति होगी।
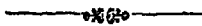
दोहा छन्द

पाप नाम नरपति करै, नरक नगर मैं राज।
तिनपठये पायकविसन, निजपुरबसतोकाज ॥६२॥

जिनके जिनकी वचन की, बसो हिये परतीत।
विसम प्रीत ते नर तजो, नरक वासभयभीत ॥६३॥

शब्दार्थ टीका

(नरपति) राजा (पठये) भेजे (पायक) नौकर-अगवानी (जिनके) जिनपुरुषों के (जिनकी) जिनदेव के (परतीत) इतबार (भयभीत) डरसे डराने वाला।

सरलार्थ टीका

पापनाम राजा नरक नगर में राज करता है तिसनैं अपनी नौकर विस नों अर्थात् पापों को अपनी नगरी के कार्य्य हेत भेजा है जिन लोगोंके मनमें जिनदेव के वचन की परतीत है ते नर विसन प्रीत तजो किसलिये कि विसन नरक वास का देने वाला है जो भयभीत है।

कुकवि निन्दा कथन

मत्त गयन्द छंद

राग उदै जग अन्धभयो सहजे सब लोगन लाज गमाई। सीख बिना नर सीख रहा बन, ता सुख सेवन की चतुराई। तापर और रचे रस काव्य क, हा कहिये तिन की निठुराई। अन्ध असूझन की

अँखियाँ मध, मेलत हैं रज राम दुहाई ॥ ६४ ॥

शब्दार्थ टीका

(सीख] शिक्षा (सीखरहा) ज्ञान रहा [रस काव्य] रस रूप काव्य (निठुराई) कठोरता (मेलत हैं) डालत हैं (रज) मट्टा (राम दुहाई) राम की दुहाई।

सरलार्थ टीका

रोग उदै जगत में अन्धा होकर सहज ही लोगों में लाश खोरकही हैं विना सिखाये ही नर खासिवन की चतुराई सीखरहा है तिसपर सुक वियोंने और रस काव्य वनादई जिन कवियों की कठोरताको देखो कि अन्धे विना सूझन वाले की आंखों में और मिट्ट डालते है दुहाई है राम की।

—०:::०—

मत्तगयंद छंद

कञ्चन कुम्भन की उपमा कहि, देत उरोजन को कवि बारे। ऊपर श्याम विलोकत के मणि, नील क की ढकनी ढक छारे। यों सत बैन कहैं न कु पण्डित' ये युग आमिष पिण्ड उघारे। साधनभा रदई मुहछार भ, ए इसहैत किधौंकुचकारे॥६५॥

शब्दार्थ टीका

(काञ्चन) सोना (कुम्भ) कलश-घट (उपमा) तुल्यता (उरोजन) कुच-छाती [बारे) बाले अनजान-मूर्ख (श्याम) काला (मणिनीलक) नीलम् जवाहर (ढकनी) चपनी सरपोश (ढकारे) ढकदिये (सत बैन) सचेबचन (कुपण्डित) खोटे पण्डित (युग) दो २ जोड़ा (आमिश) मांस (पिण्ड) गोला (उघारे) प्रत्यक्ष [छार] राख।

सरलार्थ टीका

मूर्ख कवि कुचोंको सोनेके कलशों से उपमा देते हैं और ऊपर कालापन देखकर नीलक मणिको ढकनी ढकीहुई कहते हैं ऐसे सत वचन कुपण्डित क्यों नहीं कहते कि ये दोनों कुच दो पिण्ड मांस के प्रत्यक्ष हैं और साधोंने जो मोह रूप राख इनपर झारदई है इस कारण कुच कछु काले होगये हैं।

बिधातासोंतर्क कर कुकविनिन्दाकथन

मत्तगयन्दछन्द

हेविधि भूल भई तुमतैं सम, झे न कहां कसतूरि बनाई। दीन कुरङ्गन के तनमैं तिन, दन्त धरै करुणा नहि आई। क्यौंन करी तिन जीभन जीरस, काव्य करैं परको दुखदाई। साध अनुग्रह दुर्जन दण्ड दु, उसधते विसरी चतुराई॥ ६६॥

शब्दार्थ टीका

(विध) ब्रह्मा कर्म (कसतूरि) मुश्क (दीन) गरीब (कुरङ्ग) हिर न मृग (अनुग्रह) कृपा (दुर्जन) वैरी (बिसरी) जो वस्तु चित्तसेजा ती रही अर्थात् भूलना ।

सरलार्थ टीका

हेकर्म्म वा ब्रह्मा तुमसे बडो भूल भई तुम समझे नहीं तुमने कहां क स्तूरी बनाई गरीब हिरनों के शरीर में जो दांत मैं तृण लिये हुवे हैं तु मको दया नहीं आई कि ऐसे दीन जीवोंको पापीजन कस्तूरीके लाल च हतेंगे कस्तूरी तिनकी जीभ में क्यों न करी जो परको दुखदाई रसि क काव्य बनाते हैं यदि ऐसा करते तो दोनों बात साधुअनुग्रह और दु र्जनदंड सिद्ध होजाता तुम्हारी चतुराई कहांगई ।

मनरूपहस्तीवर्णन

छप्पै छन्द

ज्ञान महावत डार; सुमति सांकल गह खण्डै ।
गुरु अङ्कुश नहि गिनै, ब्रह्म व्रत वृक्ष बिहण्डै, ।
कर सिधान्त सर हानि, केल अघ रज सों ठानै ।
करण चपलता धरे, कुमति करणी रति मानै ।

डोलतसुछन्दमदमत्त अति, गुणपथिक आवतडरै।
वैरागखम्भतैंबांधनर, मनमतङ्गविचरतबुरै ॥ ६७ ॥

शब्दार्थ टीका

(महावत) हाथीवान [कुमति] उत्तममति (सांकल) जंजीर (गह) पकड़कर [थंडे) तोड़े (अंकुश) लोहे का औजार जिससे हाथी हांकते हैं (ब्रह्मव्रत) शीलव्रत (विहण्डे) तोड़े (सिद्धान्त) आत्मज्ञानशास्त्र (सर) तलाव (केल) किलोल (अघ) पाप (रज) मिट्टी [करण] कान (कुमति) खोटीमति (करणी) हथनी (रति) रचना (सुछन्द) बेरोक आजाद मनमौजी (मद) मान और (मत्त) मस्त (पथिक] बटेऊ (खम्भ) सतून टेका [मतङ्ग) हाथी (विचरत) चलत (बुरै) बुरा।

सरलार्थ टीका

ज्ञानरूप हाथीवान को डालकर कुमतिरूप सांकल को रगड़कर तोड़े है और गुरुरूप अङ्कुशको नहीं मानकर ब्रह्म व्रतरूप वृक्ष को तोडे है और सिद्धान्तरूप तलावकी हानि करै है पापरूप धूलसों किलोल करैहै और चपलता रूप कान धरैहै और कुमतिरूप हथनीसों राचैहै और अपनै जोरमें मस्त होकर बेरोक फिरैहै गुणरूप बटेऊ जिसके सामने आताहुआ डरैहै हेनर ऐसे मनरूप हस्तीको वैराग्यरूप खम्भ ते बांध किस कारण मनरूप हस्ती का विचरना बुरा है।

गुरु उपकार कथन

घनाक्षरी छन्द

ढई सी सराय काय, पान्थ जीव बस्यो आय, रत्न
त्रय निध जापै, मोक्ष जाको घर है। मिथ्या नि
श कारी जहां, मोह अन्धकार भारी,कामादिकत
सकर, समह को थर है। सोवे जो अचेत सोई,
खोवे निज सम्पदा को' तहां गुरु पाहरू; पुकार
दया कर हैं। गाफिल न हूजे भ्रात ऐसीही अन्धे
री रात;जागरे बटेऊ जहांचोरनकोडरहै ॥ ६८ ॥

शब्दार्थ टीका

(ढई) टूटी फूटी (सराय) उतारेका स्थान (पान्थ) बटेऊ [रत्नत्रय)
तीनरत्न सम्यक् दर्शन १ ज्ञान २ चारित्र ३ (निध) संपत्ति दौलत (मो
क्ष) मोक्ष (मिथ्या) झूट (निश) रात्रि (अन्धकार) आंधी (तसकर)
चोर (थर) स्थान (अचेत) गाफिल (संपदा) दौलत (पाहरू) पह
रेवाला चौकीदार (भ्रात) भाई।

सरलार्थ टीका

टूटीफूटीसी सराय काया में जीवरूप बटेउ आवसा रत्नत्रय दौलत जिस
के पास है और मोक्ष जिस का घर है मिथ्यारूप अन्धेरीरात है और मो
ह रूप भारी आंधी चलरही है और कामआदि चोरोंको मण्डलीकास्था
न है ऐसी अवस्था में जो मनुष्य अचेत सोवैहै सो अपनी दौलत को खो

वैहै तहां गुरु पहरे वाला दयाकर ऐसे पुकारे है कि हेभाई ऐसी अव स्था में गाफिल न हूजिये जागते रहिये जहां चोरोंकाडर है।

चारोंकषायजीतनेउपायकथन

मत्तगयन्द छंद

छेम निवास छिमाधुवनी बिन; क्रोध पिशाच डरै न टरैगो। कोमल भाव उपाय बिना यह; मान महामद कौन हरैगो। आर्जव सार कुठार बिना छल' बेल निकान्दन कौन करैगो। तोष शिरोमणि मन्त्रपढ़ेबिन' लोभफणी बिष क्यों उतरैगो॥६९॥

शब्दार्थटीका

(छेम) उपद्रवरहित (निवास) स्थान (छिमा) क्षमा कर.येहुवे दुःख कासहना (क्रोध) गुस्सा (पिशाच) भूत प्रेत (मान) गरूर (हरैगो) दूरकरैगो (आर्जव) छलरहितपन सूधीपनता (सार) लोहा फौलाद (कुठार) कुल्हाड़ा (निकान्दन) उखेड़ना (तोष) सन्तोष सबर (फणि) सर्प [विष] जहर।

सरलार्थ टीका

उपद्रव रहित धर छिमारूप धुवनी विना क्रोध रूप भूत डरैगा न टरैगा धौर कोमल भाव उपाय विना मानरूप महामद को कौन हरैगा आर्जवरूप सार कुहाडे विना छलरूप वेलको कौन उखेडेगा सन्तोषरूप शिरोमणि मंत्र विना पढे लोभरूप सर्पका जहर कैसे उतरैगा।

मिष्ट बचन बोलन उपदेश

मत्तगयन्दछन्द

काहूकु बोलत बोल बुरे नर, नाहक क्यों यशधर्म्म गमावै ॥ कोमल बैन चवै किन ऐनल, गै कछु है नसवैमनभावै ॥ तालु छिदै रसनान विधै नघ, टै कुछ अङ्ग दरीद्र न आवै ॥ जीवक है जिया हान नहीं तुझ, जी सब जीवन को सुखपावै ॥ ७० ॥

शब्दार्थ टीका

(काहूकु) किसवास्ते (बैन) वचन (चवै) बोले (किन ऐन) क्यों न हीं (लगैकछु है न) लगै कुछ नहीं (तालु) तालवा (रसना) जीभ (अङ्ग) गोदी (जीव) आत्मा (जिया) जीवकी (जी) आत्मा जान दार।

सरलार्थ टीका

है नर किस वास्ते बुरे बोल बोल कर नाहक क्यों अपनो यश और ध
र्म खोताहै कोमल वचन क्यों नहीं बोलता जिसके बोलनेमें कछु नहीं
लगता और सबको प्यारा मालूम होता है जिस से तालवा छिदे नहीं
जीभ बिंधे नहीं गांठ से कछु जाय नहीं और जीवकी कछु हानि नहीं
सब जीवों का जीव सुख पावे है।

धैर्यधारणशिक्षावर्णन

घनाक्षरी छंद

आयोहै अचानक भ, यानक असाता कर्म ॥ ताके
दूर करनेको' बली कोउ हैरे ॥ जेजे मन भायेतै
क, माये पुन पाप आप ' तेई अब आये निज,
उदै काल लहरे ॥ अरे मेरे वीर काए होत है अ
धीर यामै, काहुको नसीर तू अ' कैलो आप सहरे
भये दिलगीर कि धौं,पीर न विनश जाय, याहीतै
सयाने तू त, माशागीर रहरे ॥ ७१ ॥

शब्दार्थ टीका

(असाता कर्म) दुखका देने वाला कर्म (वीर) भाई (अधीर) बे

करार-बेसबर-चलायमान (सीर) साभा (दिलगीर) दुखमान [पीर] दुख (विनश) नाश होना।

सरलार्थ टीका

चानचक भय देने वाला दुखदाई कर्म आगया जिस के दूर करने को कौन बलवान है जो जो मन में आये सो तैंने आप पुन्य पाप कमाये सो अब पुन्य पाप तेरे आगे आये देखले अरे मेरे भाई किस वास्ते अब चलायमान होता है इसमें किसीका साभा नहीं है दुख सुख सब आप उठा दिलगीर होनेसे दुख दूर नहीं होगा इस कारण हे बुद्धिमान् तू तमाशा देखने वाला रह।

होनहार दुर्निवार कथन

घनाक्षरीछंद

कैसेकैसे बली भूप; भूपर बिख्यात भये, बैरी कुल कांपे नेक, भौंहों के बिकार सों॥ लंघेगिर सायर दि, बायर से दिपें जिन; कायर किये हैं भट, को रन हुँकार सों। ऐसे महा मानी मोत, आयेहूँ नहार मानी, उतरेन नेक कभो; मानकी पहार सों॥ देवसोनहारे पुनि' दानेसों नहारे और, काएसोंन

हारे एक, हारे होनहार सों ॥ ७२ ॥

शब्दार्थ टीका

(बली) बलवान् (भूप) राजा (भू) पृथ्वी (विख्यात) प्रत्यक्ष-यशी नामी [तेज] घोडे (विकार) सुभावबदलना (लड्डे) उलांके (गिर) पहार (सायर) समुद्र-सागर (दिवायर) सूर्य (कायर) डरपोक [भट] शूरवीर (कोरन) करोरन (हुंकार) अवाज शब्द (दाने) असुर राक्षस ।

सरलार्थ टीका

कैसे कैसे बलवान् राजा धरती पर नामी और यशी भये जिनकी भौंके बदलनेसे वैरी कुल कांपैं हैं और जिनों ने पहाड़ और समुद्र उलांके हैं और सूर्य जैसे चमकैं हैं और जिनोंने करोरों शूरवीरों को अपनी हुंकारसे डरपोक बनादिया है और ऐसे बडे मानी हैं जिनोंने मौत आने पर भी हार नहीं मानी और कभी मानरूप पर्वतसे थोड़ी बार भी नीचे नहीं उतरे देवसों हारे न दानेसों हारे परन्तु एक होनहार सों हारे हैं ।

कालसामर्थ कथन

घनाक्षरी छन्द

लोहमई कोट कई, कोटन की ओट करो, कांग
रनतोप रोप' राखो पट भेरके ॥ चारोंदिश चेरा
गण; चौकस होंय चौकीदें, चहूँ रङ्ग चमूँ चहूँ,
ओर रही घेरकै ॥ तहां एक भोहराब; नायबीच
बैठो पुनि, बोलोमत कोउ जोबु, लावैनाम टेर
के ॥ ऐसीपरपञ्च पांति, रचो क्योंन भांति भांति,
कैसे हूँ न छोड़ो हम, देखो यम हेर कै ॥ ७३ ॥

शब्दार्थ टीका

(लोहमई) लोहेकी बनीहुई (कोट) सफील (कांगरा) किलेका कंगरा (पट) किवार (दिश) ओर तरफ (चेरा) चेला (गण) समूह [चौकी] पहरा (चहूंरङ्गचमू) चार प्रकारकी सेना रथ १ घोड़ा २ हाथी ३ प्यादा ४ (चहूं ओर) चार तरफ [भोहरा] तहखाना (परपञ्च) छल माया धोका (पांति) पद्धति (भांत) तरह ।

सरलार्थ टीका

लोहेके बने हुवे कैयक कोटकी ओट करो और किवार भेड़की कांगरन पर तोप राखो और चारों ओर चेलोंका समूह चौकस होकर चौकी दे और चतुरङ्ग सैना चारों तरफ घेर रही है तिस स्थान में एक भोहरा बनायकर बैठगयो और यह कहदिया जो नामलेकर बुलावे तो मत बोलो हे भाई चाहे ऐसी छल या मायाकी पद्धति क्यों न रचो परन्तु हम नें यह देखाहै कि यमराज नें हेरकर किसीको भी नहीं छोड़ा ।

अज्ञानी जीव दुखी है ऐसा कथन

मत्तगयंद छंद

अन्तक सोंन छुटैन हचैपर, मूरखजीव निरन्तर धूजै।
चाहत है चित मैं नित हो सुख,होयन लाभ मनो
रथ पूजै। तू परमन्दमति जगमैं भाई; आस बंध्यो
दुखपावक भूजै। छोड़ विचक्षण येजडलक्षण’ धी
रज धार सुखी किन हूजै॥ ७४॥

शब्दार्थ टीका

(अन्तक) यम मौत (निरन्तर) बराबर (धूजै) कांपै (मनोरथ)म
तलब (पूजे) मिलै (पावक) आग (भूजै) जलै (विचक्षण) चतुर
(जड़) मूर्ख।

सरलार्थ टीका

यह बात निश्चय है कि मौतसे कोई नहीं बचैगा परन्तु मूर्ख जीव दम
परदम कांपता है और अपने मन मैं नित सुख चाहता है परन्तु लाभ
और मनोरथ नहीं मिलता परन्तु हे भाई तू बुद्धिहीन आशाके वश हो
कर दुःखरूप अगनी में जलै है हे चतुर येमूर्खके लक्षण छोड धीरजधा
रकर सुखी क्यों नहीं होता।

धैर्यधारणशिक्षा वर्णन

मत्त गयन्द छंद

जोधन लाभ ललाट लिख्यो लघु, दीरघ सुक्रत के
अनुसारै। सोइ मिलै कुछ फेरनहो मरु, देश कि
टेरसुमेर सिधारै। कूप किधौं भर सागर मैं नर'
गागर मान मिलेजल सारै। घाटक बाध कहीं न
हिँ होयक' हा करिये अब सोच विचारै॥ ७५॥

शब्दार्थ टीका

(सुक्रत) भलीक्रत (अनुसारै) अनुकूल मुवाफिक तुल्य (मरु देशकि
ढेर) बागड़ देशके रेतके टीवे मरुस्थल भावार्थ कम पैदावा मुल्क (सु
मेर) सोनेका पहाड़ (कूप) कूवा [सागर] समुद्र (गागर) घट घ
ड़ा (मान) तुल्य (सारै) सबजगह।

सरलार्थ टीका

जोधन लाभ कम बढ़ती भलो क्रत के अनुसार ललाट में लिखा गया
सोई मिलैगा इसमें कछु फेर नहीं है चाहे बागड़ देशके टीबोंमें जिनमें
कुछ पैदा नहीं होता चाहे सुमेर परवतपर जो सोनेका है जाओ जैसे
चाहे कूप। में चाहे सागर में भरो हेनर घड़ेकी तुल्य सारै जल मिलेगा

कहीं घाट बाध नहीं होगा फिर क्या सोच विचार करिये।

आशानाम नदी वर्णन
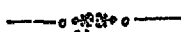
घनाक्षरीछंद

मोह से महान ऊँचे ' पर्वत सों ढर आई तिहूँ
जग भूतल को; पाय बिसतरी है। विविध मनोर
थ मैं भूरि जल भरी वहु, तिशना तरङ्गन सों ' आ
कुलता धरी है। परैभ्रमभँवरजहां ' राग से मगर
तहां ' चिन्ता तट तुङ्ग धुज ' धर्म ढाय ढरी है।
ऐसी यह आसा नाम ' नदी है आगाध महा ?
धन्य साधु धीरयत ' रणी चढ़ तरी है ॥ ७६ ॥

शब्दार्थटीका

(महान) बडे (भूतल) पृथ्वी धरातल (विसतरी) फैली (विविध नानाप्रकार (भूरि) अधिक (तरङ्ग) लहर (आकुलता) व्याकुलता (तुङ्ग) ऊंचा (अगाध) अथाह गहीर (तरणि) नौका।

सरलार्थ टीका

मोहरूप बडे ऊचे पहाड़ से ढलकर आई तिहूं जगमें धरतीपर फैलीहै

और नानाप्रकार मनोरथरूप अधिक जलसे भरीहै और तृष्णारूप लहरों से आकुल होरही है और जिस नदी में भ्रमरूप भवर रागरूप मगर हैं चिन्तारूप तट हैंजोहच धरम के ढायकर ढरी है ऐसो यह आशा नाम नदी अथाह है धन्यहै उन साधोंको जो आशानाम नदी को धीरज रूप नौका पर चढकर तिरगये हैं ।
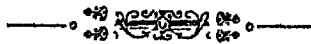
महामूढ वर्णन

घनाक्षरी छन्द

जीवन कितेक तामें, कहाँबीत बाकीं रह्यो, तापे
अन्ध कौन कौन, करै हेर फेर ही। आप को च
तुर जाने, औरनको मूढ माने, सांझ होन आई
है वि, चारत सवेर ही। चामही के चखन सों,
चितवै सकल चाल, उरसों न चौंधेकर, राखो है
अन्धेरही। बाहै बान तानकै अ, चानक ही ऐसो
यम, दीखैहै मसानथान हाडनको ढेरही ॥ ७७ ॥

शब्दार्थ टीका

[जीवन] जीवना (कितेक) कितनो अर्थात् बहुतथोड़ा (कहा बीत बाकी रह्यो) क्या बदीत होकर बाकीरह्यो अर्थात् कुछ बाकी नहीं र

श्यौ (अन्ध) अन्धा (चखन) आंख (चितवै) देखे (उर) हृदय (चौधे) विचारै (बाहै) चलावे (बान) तीर (मसान थान) मर्घट ।

सरलार्थ टीका

प्रथम जोवना ही थोड़ा है तिसमें से वहोत होकर कुछ काल अर्थात् थोड़ा बाकी रह गया फिर इस थोड़ेसे जोवन पर कैसे कैसे हेर फेर करे है आप को चतुर जानैं औरोंको मूढ मानैं सांझ काल होनेपर भी सवेरा विचारै है सारो वस्तु नैनों से देखे है हृदेसे नहीं देखता अन्धेर कर रक्खा है यमरोज अचानक ऐसा तीर तानकर चलावेगा कि मर्घट में हाडों का ढेर दिखाई देगा ।

घनाक्षरीछंद

कैती[१] वार[२] स्वान[३] सिंघ[४], साबर[५] सियाल[६] साँप, सि.
स्युर[७] सारङ्ग[८] सूसा[९], सूरी उदर परो । कैतीवार चील[१०]
चम[११],गादर[१२] चकोर[१३] चिरा, चक्रवाक[१४] चातक[१५] चं,डूल[१६]
तन भी धरो । कैतीवार कच्छ[१७] मच्छ[१८], मैंडक[१९] गिंडोला[२०]
मीन[२१], शङ्ख[२२] सीप[२३] कौडी[२४] हो ज,लूका[२५] जलमें तिरो ।
कोई कहै जायरे जि, नावर तो बुरोमानै, यों न
मूढ जानै मैं अनेक बार हो मरो ॥ ७८ ॥

शब्दार्थ टीका

[स्वान] कुत्ता (सिंघ) बाघ-शेर (सावर) बारासींगा (सियाल) गीदड़ (सिन्धुर) हाथी (सारङ्ग) मृग-हिरन (उदर) पेट [चक्रवाक] चकवा (चातक) पपहिया (कछ) कछवा (मछ) मगर (मीन) मछली (जलूका) जोक ।

सरलार्थ टीका

कितनी वार मनुष्यनें स्वान आदि जलूका पर्यन्त अर्थात् बहुतसी योनि धारण करी इसपर यदि कोई जिनावर कहै तो मूर्ख पुरुष अति बुरा मानैहै यह नहीं जानता कि मैं अनेक बार पशु पची आदि नाना प्रकार जन्तुओंकी योनि मैं होकर मरगया हूं ।

दुष्टजनवर्णन

छप्पै छन्द

कर गुण अमृत पान; दोष विष विषम समप्पै ।
वक्र चलन नहिँ तजै; युगल जिह्वा मुख थप्पै ।
तकै निरन्तर छिद्र; उदैपर दीपन रुच्चै ।
बिन कारण दुख करै; रविश कबहूँ नहि मुच्चै ।

वर मौनमन्त्रसों होय वश' सङ्गत कीये हान है।
बहुमिलतआनयातैंसही; दुर्जनसाँपसमान है॥ ७९॥

शब्दार्थ टीका

(पान) पीना (विष) जहर (विषम) भयानक (समर्थे) उत्पन्नकारे (वङ्क) वांको (युगल) जोड़ो दोय (थर्पे) थापे (छिद्र) छेक (पर) पराया (दीप) दिवला (रूचे) आनन्दहोय (रविश) चाल (मुच्चे) छोडे (वर) उत्तम [मौन] चुप (हान) टोटा (बान) सुभाव (दुर्जन) खोटाजन ।

सरलार्थ टीका

गुणरूप अमृत को पीकर दोषरूप भयानक जहर उगलैहै और अपनो वांको चालको नहीं छोडे है और दोय जीभ मुखमें थापे है भावार्थ एकसे कुछ कहे है दूसरेसे कुछ कहे है और निरन्तर छेवा को ताकता है भावार्थ नाना प्रकार के छिद्र बातके देखता है और पराये दिवलेके उदयपर आनन्द नहीं होताहै भावार्थ पराई प्रभुता देखकर आनन्दनहीं मान्ता है और बिन कारण दुख करता है और अपनी चाल को नहीं छोडता है ऐसा पुरुष उत्तम मौनमंत्रसों वशमें आताहै जैसे किसीकवि ने कहा है। (दोहा) मूरखको मुख बम्बई, निकसे वचन भुजङ्ग।

ताकी दारू मौनहै, विष नहिं व्यापे अङ्ग ॥१॥

ऐसेको सङ्गतिसे टोटा है बहुत सुभाव जो मिले है इस कारण दुर्जनपुरुष सांपके समान है।

—०॥०—

विधातासों वितर्ककथन

घनाक्षरीछंद

सज्जनजोर चेतो सु' धा रस सों कौन काज, दुष्ट
जीव कीया काल' कूटसों कहा रही। दाता निर
मापे फिर' थापे क्यों कलप वृच्छ' याचक विचारे
लघु; तृण हू तैं हैं सही। इष्टके सम्योग तैं न '
सीरो धनसार कुछ; जगत को ख्याल इन्द्र' जाल
समहै भही। ऐसी दोय बात दीखैं, विध एक ही
सो तुम;काएको बनाईमेरे'धोकोमनहै यही॥८०॥

शब्दार्थ टीका

(सज्जन) भले पुरुष (रचे) पैदाकरे (सुधारस) अमृत (कालकूट) विष-जहर (निर्मापे) पैदाकरे (कलपवृच्छ) कल्पतरू (याचक)मांग ने वाला (इष्ट) प्यारा (संयोग) मिलाप (सीरो) ठण्ढा (घनसार) कपूर जल चन्दन [विधि] ब्रह्मा।

सरलार्थ टीका

कवि विधातासों तर्क अर्थात् शङ्का करे है कि हे विधाता तैनें यदि स ज्जन रचेथे तो फिर अमृतसों कौन काजथा भावार्थ सज्जन पुरुष की हो

नेपर अमृत को कोई लोड नहीं थी दुष्टजन उत्पन्न करे फिर विष से क्या प्रयोजन रहा दाता बनाये फिर कल्पवृक्ष क्यों बनाये और जब या चक्र पुरुष पैदा करे तो फिर तृण क्यों पैदाकरे इनके मिलने को बराव रघनसार शीतल नहीं है और जगतके ख्याल इन्द्रजाल को सम झूटेहै ऐसो ये दो दो बात जो एकसों दिखाई देती हैं हे विधाता किस कार या बनाई मेरे मनमें इसका धोका है

—※—
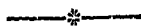
चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न वर्णन

छप्पै छन्द

१ २ ३ ४
गजपुंच गजराज; बाजि बानर मन मोहै ।
५ ६ ७ ८ ९
कोक कमल साँथिया' सोम सफरीपति सोहै ।
१० ११ १२ १३ १४
शीतल गैंडा महिष; कोल पुनि सेही जानों ।
१५ १६ १७ १८ १९ २०
वज्र हिरन अज मीन' कालश कच्छप उर मानों ।
२१ २२ २३ २४
शतपत्र शङ्ख अहिराज हरि' ऋषभदेवजिनआदिले ।
श्रीवर्द्धमानलौंजानिये' चिन्हचारुचौबीसये ॥ ८१ ॥

शब्दार्थ टीका

(गजपुत) बैल (गजराज) हाथी (बाज) घोड़ा (बानर) वन्दर (कोक) मैंडक (कमल) फूलविशेष (सांथिया) चिह्न विशेष जो दे वपूजा में मङ्गलीक होता है ऐसा चिन्ह *|* —+— *|* (सोम) चन्द्रमा (स फरो पति) मगर मछ [शीतर] कल्पवृक्ष (गैंडा) पशु विशेष (महिष) भैंसा (कोल) सूर (कलश) घट (कच्छप) कछुवा (शत पत्र) कमल का फूल विशेष [शङ्ख] जल जन्तु का घर जो वैष्णव म त के मन्दिरों में बजाते हैं (अहिराज) सर्प (हरि) सिंह (ऋषभदेव जिन) आदिनाथ स्वामी पहले तीर्थंकर (श्रीवर्द्धमान) महावीर स्वा मी पिछले तीर्थंकर (चिन्ह) निशान (चारु) भले ।

सरलार्थ टीका

श्रीआदिनाथ १ के बैल श्रीअजितनाथ २ के हाथी श्रीसम्भवनाथ ३ के घोड़ा श्रीअभिनन्दननाथ जी ४ के वन्दर श्रीसुमतनाथ जी५केमैंडक श्री पद्मप्रभुजी ६ के कमल श्रीसुपार्श्वनाथजी ७ के सांथिया श्रीचन्द्रप्रभुजी ८ के चन्द्रमा श्रीसुविधिनाथजी ९ के मच्छ श्रीशीतलनाथजी १० के क ल्पवृक्ष श्रीश्रेयांसजी ११ के गैंडा श्रीवासपूज्यजी १२ के भैंसा श्रीविम लनाथजी १३ के सूर श्रीअनन्तनाथजी १४ के सेही श्री धर्मनाथ जी १५ के बज्र श्रीशान्तिनाथजी १६ के हिरन श्रीकुन्थुनाथजी १७ के बक रा श्रीअरहनाथजी १८ के मछली श्रीमल्लिनाथ १९ के कलश श्रीमुनिव्र तनाथजी २० के कछुवा श्रीनमिनाथजी २१ के शतपत्र श्रीनेमिनाथजी के२२शङ्ख श्रीपार्श्वनाथजी २३के सर्प श्रीमहाव रस्वामी २४ के सिंह श्री आदिनाथस्वामी पहले तीर्थंकर आदि श्रीमहावीर स्वामी पिछले तीर्थं कर पर्यन्त ये भले चौवीस चिन्ह हैं ।

श्रीऋषभदेवजीके पूर्वभव कथन
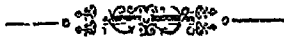
घनाक्षरी छंद

आदि[१] जैबरमा दूजै[२] महाबल भूप तीजै स्वर्ग ईशा
न ललितांग[३] देव भयो है। चौथे[४] बज्रजङ्घ राय पां
चवें[५] युगल देह सम्यक हो दूजे[६] देवलोक फिरगयो
है। सातवें[७] सुबुधि देव आठवें[८] अच्युतइन्द्र नोमे
भो नरिन्द्र[९] बज्र नाभिनाम भयो है। दशमैं[१०] अह-
मिन्द्र जान ग्यारमैं[११] ऋषभभान नाभि बंश भूधरके
माथे जन्म लियो है ॥ ८२ ॥

शब्दार्थटीका

(ईशानस्वर्ग) सोलह स्वर्गों में से दूसरे स्वर्गका नाम (युगलदेह) जो
ड़ या जोड़ा [सम्यक] श्रद्धा (अच्युत)सोलवें स्वर्गका नाम (भानु)
सूर्य (भूधर) पहाड़।

सरलार्थ टीका

पहले भोमें आदिनाथस्वामी जैवरमा नाम भये दूसरे जन्म में महाबल नाम राजाहुये तीसरे भोमें ईशान नाम स्वर्गमें ललितांग नाम देवभये चौथे वज्रजंघ नाम राजा कहाये पांचवें जन्म में जोड़िया स्त्री पुरुष भोग भूमिया बने छठे भोमें सम्यक होकर दूसरे देव लोक अर्थात् ईशान नाम स्वर्ग में गये सातवें भोमें सुबुद्धिदेव नाम भये आठवें भोमें अच्युत स्वर्गमें इन्द्रहुये नौमेभोमें वज्रनाभि नाम चक्रवर्ती भये दशमेभो में अहमिन्द्र हुये ग्यारमेभोमें ऋषभरूप सूर्यनें नाभिवंशरूप पर्वत के सिरपर जन्मलियो है भावार्थ ग्यारमेभोमें नाभिनाम राजा के श्रीऋषभ देव उत्पन्न भये ।
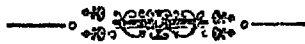
श्रीचन्द्रप्रभुस्वामी के पूर्वभव कथन

गीता छन्द

श्रीवर्म[1] भूपति पाल पुहमी, स्वर्ग पहले सुरभयो[2] ।
पुनि[3] अजितसैनछखण्ड नायक, इन्द्र[4] अच्युतमेंथयो ।
वर पद्मनाभि[5] नरेश निर्जर[6], वैजयन्त विमानमें ।
चन्द्राभ[7]स्वामी सातवें भव, भये पुरुषपुराणमें ॥८३॥

शब्दार्थटीका

(बर्मभूपति) राजाकानाम (पालपुहमी) पालनेवाला पृथ्वीका (सु र) देवता (पुनि) फिर (अजितसेन) राजाकानाम (नायक) सर दार बडा (वर) श्रेष्ट [पद्मनाभि] राजा को नाम (निर्जर) देवता [वैजयन्त बिमान] सोलह स्वर्गोंके ऊपर एक विमान का नाम (चन्द्राभ) चन्द्रकैसी आभा जिसकी (पुरुषपुराण) महान् पुरुष।

सरलार्थ टीका

पहले जन्म में देवता श्रीवर्मभूपति नाम राजा पृथिवी के पालने वाले हुये दूसरे भोमें पहले स्वर्गंवो धर्म्म नाम में देवताभये तीसरेभोमें अजि तसेन नाम राजा चक्रवर्ती भये फिर चौथेभोमें अच्युतनाम सोलवें स्वर्ग में इन्द्र भये फिर पांचवें भोमें पदमनाभि नाम राजा हुये फिर छठेभो में वैजयन्त नाम विमानमें निर्जर अर्थात् देवता भये फिर सातवें भोमें चन्द्राभ नाम अर्थात् चन्द्रप्रभु स्वामी नाम महान् पुरुष तीर्थङ्कर भये।

श्रीशान्तिनाथस्वामीके पूर्वभवकथन

सवैया इकतीसा

सिरीसेन[1] आरज[2] पुनि स्वर्गी[3], अमित तेज खेचर[4] पद पाय। सुर रवि चूल[5] स्वर्ग आनत में, अपरा[6] जित बलभद्र कहाय। अच्युत इन्द्र[7] वज्रायुध चक्री[8]

९ १० ११
फिर अहमिन्द्र मेघरथ राय । सरवारथ सिद्धेश शा
१२
न्ति जिन, ये प्रभुकी बारह पर्याय ॥ ८४ ॥

शब्दार्थ टीका

(श्रीसेन) नाम (आरज) भोगभूमिया (पुनि) फिर (स्वर्गी) स्वर्ग का रहने वाला अर्थात् देवता (अमित तेज) नाम विद्याधर (खेचर) आकाश गामी (रविचूल) नाम देवता (आनत) तेरवें स्वर्गका नाम (अपराजित) जो जीता न जावे (बलभद्र) नाम (बज्रायुध) नाम (चक्री) चक्रवर्ती (मेघरथराय) राजा का नाम [सरवारथ] स्वर्गों के ऊपर स्थान का नाम (सिद्धेश) सिद्धोंका ईश (पर्याय) योनी ।

सरलार्थ टीका

पहले भव में श्रीषेन नाम हुये २ भोग भूमिया ३ स्वर्ग वासी ४ अमित तेज नाम विद्याधर आकाश गामी ५ रविचूल नाम देवता आनतनाम तेरवें स्वर्गमें ६ अपराजित नाम बलभद्र ७ अच्युत सोलवें स्वर्ग में देवता ८ बज्रायुध नाम चक्रवर्ती ९ अहमिन्द्र १० मेघरथ नाम राजा ११ सर वारथ सिद्धेश १२ शान्तिनाथ स्वामी जिनदेव ये बारह भव श्री शान्ति नाथ स्वामीके हैं जो ऊपर कहे।

श्रीनेमिनाथ जी के भव वर्णन

छप्पै छन्द

पहले भवदन भील ' दुतिय अभिकेतु सेठघर ।
तीजै सुर सौधर्म ' चौथ चिन्ता गतिनभचर । पं
चम चौथे स्वर्ग ' छटै अपराजित राजा । अच्युत
इन्द्र सातवें ' अमर कुल तिलक विराजा । सुप्र
तिष्टराय आठम नवें ' जन्म जयन्त बिमान धर ।
फिर भये नेमि हरिवंश शशि ' ये दश भव सुधि
वारहुनर ॥ ८५ ॥

शब्दार्थ टीका

(भील) जातिविशेष (अभिकेतु) नाम (सौधर्म) पहले स्वर्ग का नाम [चौथ] चौथे (चिन्तागति) नाम विद्याधर (नभचर) आकाशगामी (अमर) देवता (तिलक) शिरोमणि (सुप्रतिष्ट) नामराजा (जयन्त) एक बिमान का नाम (शशि) चन्द्रमा ।

सरलार्थ टीका

१ बनमें भील हुये २ अभिकेतु नाम हुये जो सेठ के घर में पैदा हुये ३ सौधर्म नाम स्वर्गमें देवता हुये ४ चिन्तागति नाम आकाश गामी विद्याधर भये ५ चौथे स्वर्गमें देवता हुये ६ अपराजित नाम राजा हुये ७ अच्युत स्वर्गमें इन्द्र होकर देवताकुल में शिरोमणि हुये ८ सुप्रतिष्ठनाम राजा हुये ९ जयन्त बिमानधारी हुये १० हरिबंश कुल के चन्द्रमा श्री नेमिनाथ स्वामी तीर्थङ्कर हुये ये दश जन्म है नर विचारले ।

श्रीपार्श्वनाथ जी के भवान्तर नाम

सवैयाइकतीसा

विप्र पूत मरु भूत विच चण' वज्र घोष गज ग
हन संझार। सुरपुनिसहसरश्मि विद्याधर; अच्युत
स्वर्ग अमरी भरतार। मनुज इन्द्र मद्धम ग्रैवेयक'
राजपुत्र आनंद कुमार। आनतेन्द्र दश मैं भव जि
नवर, भये पास प्रभु को अवतार॥ ८६॥

शब्दार्थ टीका

(विप्र) ब्राह्मण (पूत) बेटा (मरुभूत) नाम (विचचण) चतुर (वज्रघोषगज) हाथी का नाम (गहन) बन (मझार) बीच (सुर) देवता (सहस्ररश्मि) नाम विद्याधर (अमरी) देवअङ्गना (भरतार) पति [मनुज] मनुष्य (ग्रैवेयक) स्वर्गोंसे ऊपर स्थान हैं जो गिन्तीमें ९ हैं।

सरलार्थ टीका

१ भव में ब्राह्मण के पुत्र मरुभूत नाम हुये २ जन्म में वज्रघोष नाम ह स्ती हुये ३ भवमें देवता ४ जन्ममें सहस्ररश्मि नाम विद्याधर हुये ५ अच्युत नाम सोलवें स्वर्गमें देव अङ्गना पति भये ६ जन्म में राजा भये ७ मध्यम ग्रैवेयकों में देवता हुये ८ आनन्द कुमार राजपुत्र हुये ९

आनत स्वर्ग में इन्द्रहुये १० भव में जिनवर पार्श्वप्रभु के अवतारहुये।

राजा यशोधर के भवों का कथन

मत्तगयंद छंद

राय यशोधर चन्द्रमती पह ' ले भव मण्डल मोर[१]
कहाये। जाहक सर्प[२] नदी[३] मधमच्छ[४] अजा अज भैंस[५]
अजा[६] फिर जाये। फेर भये कुक्कड़ा कुक्कड़ी[७] इस '
सात भवान्तर में दुख पाये। चून मई चरणायु
ध मारक ' या सुन सन्त हिये नरमाये ॥ ८७ ॥

शब्दार्थ टीका

(यशोधर) राजा का नाम (चन्द्रमति) राणी का नाम (मण्डल) देश (मोर) पक्षीविशेष (जाहक सर्प) सर्प विशेष (अजा) बकरी (अज) बकरा (कुकड़ा-कुकड़ी) मुरगा-मुरगी (चूनमई) चून अर्थात् आटेका (चरणायुध) मुरगा-कुकड़ा।

सरलार्थ टीका

१ भव राजा यशोधर और जिस की चन्द्रमति राणी मरकार मण्डल में मोर और मोरनी अर्थात् राजा यशोधर मोर हुये और चन्द्रमति राणी मोरनी इसी प्रकार पुरुष पुरुष स्त्री स्त्र २ जाहक सर्प ३ मच्छ मच्छी ४ बकरा बकरी ५ भैंसा भैंस ६ बकरा बकरी ७ मुर्गा मुर्गी इस प्रकार सात भव में दुख पाये राजा यशोधर के चूनका मुर्गा बना कर मारने का कथन सुन सन्तजन अपने हृदेमें नरमाये।

सुबुद्धि सखी प्रति वचनोंच

घनाक्षरीछंद

कहै एक सखी स्यानी; सुनरी सुबुद्धि रानी, तेरो
पति दुखी देख, लागै उर आर है। महा अपरा
धी एक, पुग्गल है छहों मांह, सोई दुख देत दी
खै, नाना प्रकार है। कहत सुबुध आली, कहा
दोष पुग्गल को, अपनीहि भूल लाल, होत आप
ख्वार है। खोटोदाम आपनो स, राफै कहा लगै
और, काजको न दोष मेरो भोंदू भरतार है॥८८॥

शब्दार्थ टीका

(सखी) स्त्री [स्यानी] चतुर (सुबुद्धि) भली बुद्धि वाली (पति)

मालिक भर्तार (मार) कांटा (अपराधी) पापी (पुग्गल) पुदगल द्रव्य छओं द्रव्यमें से एक द्रव्य का नाम है (आलो) सखी (लाल) प्यारो (ख्वार) खराब (भौंदू) मूर्ख [भरतार] पति ।

सरलार्थ टीका

एक स्यानी सखी सुबुद्धि रानीसे कहै है कि हे सुबुद्धि रानी तेरो पति दुखी देखकर मेरे उरमें कांटासा लगै है षट् द्रव्यों में से एक पुदगल द्रव्य महा पापी है सो नाना प्रकार दुखदेता दिखाई देता है फिर सुबुद्धि सखी ऐसा उत्तर देती है कि हेलाल पुदगलको क्या दोषहै अपनी भूलसे आप जीव खराब होरहा है अपना खोटा पैसा सराफे बाजारमें क्योंकर चलै भावार्थ किसी का दोष नहीं मेरा ही पति मूर्ख है ।

गुजराती भाषा में शिक्षा

कड़का छन्द

ज्ञानमय रूप रू, डो बनो जेहूँ न, लखे क्यौं न रे सुख, पिण्ड भोला । बेगली देहथी, नेह तोसों करै, एहनी टेव जो, मेह बोला । मेरने मानभव, दुक्ख पाम्या पछे, चैन लाधो नथी, एक तोला । बलो दुख बचन, बीज बावै तुमें, आपयो आपनै,

आप बोला ॥ ८९ ॥

शब्दार्थटीका

(ज्ञानमय) ज्ञान का बना हुया (रूप) मूरति (रूडो) सुन्दर (जेह्न) जिसको (लखैं) देखै (न) नहीं (रे) अरे (पिण्ड) गोला (भोला) सीधा सादा (बेगली) जुदी (नेह) प्यार (एहनो) इस को (टेव) स्वभाव (मेह) हमनें (बोला) कहो (मेरने मान) अपनो मत मान [पाम्या] पाकर (पछे) पछतावे (लाधो) पायो[नथी] नहीं (तोला) तोल का नाम (बली) बलवान् (बावै) बोवै (तुमें आपथी) तुम आपही (आपने) आपसे (आपबोला) हमनें कहा।

सरलार्थ टीका

अरे सुख पिण्ड सीधे सादे तू आप ज्ञान मूर्ति सुन्दर बना है सो अपने ज्ञानमय स्वरूप को किस वास्ते नहीं देखता देह तेरे से अर्थात् आत्मा से न्यारीथी तैंने से नेह कर लिया इसका यही स्वभाव है जो हमने कहा इस देहको अपनी मत माने भव दुःख पाकर पछतावैगा एकतोला भर भी चैन नहीं मिलैगा बड़े दुःखके वृक्षका बीज तू आपही मतबोवै आपसे हमनें कहा।

द्रव्यलिङ्गी मुनि निरूपण कथन

मत्तगयंद छंद

शीत सहैं तन धूप दहैं तरु, हेटरहैं करुणा उर आनैं ।
झूटकहैं न अदत्तगहैं बन, तान चहैं लक्षिलोभनजानैं ।
मौन बहैं पढ़भेद लहैं नहिँ, नेम जहैं व्रतरीत पिछानैं ।
योंनिवहैंपरमोखनहींबिन, ज्ञानपहैंजिनवीरबखानैं ।९०।

शब्दार्थ टीका

(हेठ) नीचे (लछि) लक्ष्मी (मौन) चुप (वहैं) रहैं (भेद) अन्तर (जहैं) तोड़ैं (निबहैं) गुजारैं (मोख) मोक्ष (पहैं) हुये ।

सरलार्थ टीका

शीतकाल की बाधा सहैं और तनको धूपमैं जलावैं वर्षा ऋतु मैं वृक्षके नीचे खडे रहैं और दया मनमैं लावैं झूट बोलैं न बिन दिया माल लैं न स्त्री चाहैं न लक्ष्मीका लोभ जानैं चुप रहैं शास्त्र पढ़कर भेद लहैं नेम को तोड़ैं नहीं और व्रतकी रीति पिछानैं हैं मुनिजन ऐसे निबाहै हैं परन्तु बिन ज्ञान हुये मोक्ष नहीं होती ऐसा वीर जिन बखाने है ।

—०—

अनुभव प्रशंसा कथन

—०—

घनाक्षरीछंद

जीवनअलपआज,बुद्धिबलहीनतामैं, आगमअगाधसिन्धु,

कैसेतहांडाकहै । द्वादशाङ्गमूलएक, अनभौअभासकला, जन्मदाघहारीघन, सारकीसलाकहै । यहांएकसीखलीजे ,याहीकोअभासकीजे, याहीरसपीजैऐसा, बीरजिन वाक है । इतनोंहीसारयही, आतमकोहितकार, यहीलोंसँभारफिर, आगैढूकढाकहै ॥ ९१ ॥

शब्दार्थ टीका

(अलप) थोड़ा (आगम) शास्त्र (अगाध) गहरा (सिन्धु) समुद्र (डाक) उछलना फलांगमारना (द्वादशाङ्ग) बारहभाग [मूल] जड़ (अनुभव) शुद्ध विचारना [अभास] छाया (कला) बल (दाघ)गरमी (घनसार) बादलका जल (सलाक) डण्डा (ढूक ढाक) कुछनहीं ।

सरलार्थ टीका

प्रथम अव्र जीवना थोड़ा तिसपर बुद्धि बल करकी हीन शास्त्र गहरा समुद्रहै फिर कैसे फलांगा जाय द्वादशाङ्ग वाणीकामूल क्या है उत्तम विचार करनेकी सामर्थ सो जन्मरूप गरमीके दूर करनेको मेघकी जलकी धार है यही अर्थात् अनुभव अभास सीख लीजिये और इसही का अभास कीजिये और इसही रसकी पीजिये इस प्रकार बीर जिन का वचनहै इतनीही बात सार और आत्माकी हितकारी है इसहीको संभाललो आगे फिर कुछ नहीं है।

श्रीभगवानसोंबीनती

घनाक्षरीछंद

आगमअभ्यासहोय, सेवासरवज्ञतेरी, सङ्गतसदीवमिलो, साधरमीजनकी । सन्तनकेगुणकोव, खान यह बानपरै, मेटोटैवदेवपर, औगुणकथनको । सबहीसोंऐनसुख; दैन सुखबैनभाखो' भावना त्रकालराखो, आतमीकधनकी । जोलौं कर्मकाटखोलूँ' मोक्षकेकपाटतोलूँ' यहीबातहूजो प्रभु; पूजोआसमनकी ॥ ९२ ॥

शब्दार्थ टीका

(सरवज्ञ) सभ वस्तुका जानने वाला अर्थात् जिनदेव (साधरमी) धरमात्मा पुरुष (टेव) सुभाव (ऐन) इवह्र (बैन) बचन (भाखो) बोलो (भावना) इच्छा (त्रकाल) तीनकाल (आतमीक) अपनी आत्मा (कपाट) किवाड़ (पूजो) पूरो ।

सरलार्थ टीका

शास्त्रका अभ्यास होय और सर्वज्ञ देवकी पूजा करूं और सदीव साधरमी जनोंको सङ्गत मिलयो और सन्तोंके गुणोंके कहन की बान परयो और पराये अवगुण के कथन का सुभाव भोदेव दूर करो और सब ही सों प्रति सुखदेनेवाले वचन बोलो और तीनोंकाल आतमीक धन की भावना राखो और भोप्रभु जबतक कर्म काटकर मोक्षके किवार खोलं, तबलग यही बात हूजो कि मेरे मनको आशा पूरण करो ।

जैनमत प्रशंसा कथन

दोहा छन्द

छये अनादि अज्ञानतैं' जगजीवनकेनैन । सबमत मूठीधूलकी, अञ्जनजगमैंजैन ॥ ९३ ॥ मूलनदीकेतिरनको' और जतनकछुहैन । सबमतघाटकुघाटहैं; राजघाटहैजैन ॥ ९४ ॥ तीनभवनमैंभररहे' थावरजङ्गमजीव । सबमतभच्छकदेखिये' रच्छकजैनसदीव ॥ ९५ ॥ इस अपारभवजलधिमैं' नहिंनहिंऔरइलाज । पाहनवाहनधर्मसब; जिनवर धर्म जिहाज ॥ ९६ ॥

शब्दार्थ टीका

(अनादिकाल) वह काल जिसका आदि न हो १ हैनहैनहो [राजघाट] बड़ाघाट २ (तीन भवन) तीन लोक (भच्छक) खाने वाले (रच्छक) रच्छा करने वाले ३ (भव) संसार (जलधि) समुद्र (पाहन) पत्थर (वाहन सवारी-नौका ४ ।

सरलार्थ टीका

संसारी जीवोंकी आंख अनादिकालसे अज्ञानसे छाई हुई हैं सारे मत

धूलको मूठी हैं परन्तु जैन मत अञ्जन समानहै १ भूलरूप नदीके तिर नेके लिये और कछु जतन नहीं है सारे मत कुघाट हैं परन्तु जैन मत राज घाट है २ तीन लोक में चराचर जीव भरे हुयेहैं सारे मत भक्षक दीखैं हैं परन्तु जैनमत सदीव रक्षक है ३ इस संसार रूप अपार समुद्र में और कछु इलाज नहीं है किस कारण जितने पर धर्म हैं पत्थर को नाव हैं केवल जैन धर्म जिहाजके समान है।

दोहा छंद

मिथ्यामतकेमदछिके' सबमतवालेलोय । सबमतवालेजा निये' जिनमतमत्तनहोय ॥ ९७ ॥ मतगुमानगिरपरचढ़े; वडेभयेजगमाँह । लघुदेखें सबलोककों । क्योंहीं उतरत नांह ॥ ९८ ॥ चामचक्षुसोंसबमती' चितवतकरतनवेर । ज्ञाननैनसोंजैनही ; जोवतइतनोफेर ॥ ९९ । ज्योंबजाज. ढिगराखकै' पटपरखैपरवीन । त्योंमतसेमतकोपरख' पा वैपुरुषअमोल ॥ १०० ॥

शब्दार्थ टीका

[मिथ्या] झूट (मद) मदिरा (छिके) पेटभरके पिये (सबमतवाले) सारेमतों अर्थात् धरमों वाले (लोय) लोग (मतवाले) मस्त (मत्त) मस्ती १ (गुमान) मान (गिर) पहाड़ २ (चक्षु) आंख [चितवत] देखकर (नवेर) नवेड़ [जोवत] ढूंडे (फेर) फरक ३ (बजाज) क पड़ावेचने वाला (ढिग) निकट (पट) कपड़ा (परवीन) चतुर) अ

मीन) परिहत ४ ।

सरलार्थ टीका

सारे मत वाले लोग मिथ्या मतरूप मदिरासों पेट भरे हुये हैं सभोंको मस्तजानों परन्तु जिनमतमें मस्ती नहीं है १ मत मानरूप पहाड़ पर चढकर संसारमें बडे भये हैं सारे लोकको तुच्छ देखैहैं नीचे क्यों नहीं उतरते सारे मतवाले चामके नेत्रोंसे देखकर नवेड़ा करैहैं और जैनमत वाले ज्ञानके नेत्रोंसे देखैहैं इतनोही फेरहै ३ जैसे चतुर बजाज दो कपड़ोंको अपने पास रखकर एक दूसरे को परखै है तैसे अमीन पुरुष मत को मतसे परख पावै है ४ ।

दोहा छन्द

दोयपक्षजिनमतविष; निश्चैअरव्योहार । तिनबिनलहै न हंसयह' शिवसरवरकोपार ॥ १०१ सीझै सीझै सीझहो; तीनलोकतिहुँकाल । जिनमतको उपकारसभ; मतभ्रम करहुदयाल ॥ १०२ ॥ महिमाजिनवरवचनकी' नहींवच नबलहोय । भुजबलसौं सागर अगम; तिरैनतारैकोय ॥ १०३ ॥ अपनेअपनेपन्थको' पोखैसकलजहान । तैसेयह मतपोखना' मत समझै मतवान ॥ १०४ ॥ इस असार संसारमैं, औरनसरणउपाय । जन्मजन्म हूजो हमैं' जिन वरधर्मसहाय ॥ १०५ ॥

शब्दार्थ टीका

(पक्ष) तर्फदारी (निश्चै) विश्वास निर्णय (व्योहार) संसारी रीत (लहै) देखै (हंस) जीव (सरवर) तलाव (पार) पाल १ (झीभे) पकचुके (सीमें) पकेंगे (सीझहि) पकतेहैं २ (महिमा) बडाई (जिनवर) श्रीजिन (अगम) अथाह जहां जा न सके (पोखै) पालें (मतवान) मतवाले ४ (असार) पोला थोथा (सरण) सहारा [उपाय] यत्न ५ ।

सरलार्थ टीका

जिनमत विषे दो पक्ष मानीगई हैं निश्चैनय १ व्योहारनय २ इन दोनों पक्षके मानेबिन जीव मोक्ष नहीं होगा १ जोपुरुष तीनलोक तीनकाल में पक जाचुके अर्थात् मोक्ष जाचुके वा जायगे वा जातेहैं यह सब जिनमतका उपकार है औदयाल इस बातमें मेरा चित्तभ्रम मत कर २ जिनवर धर्मकी बडाई कथनके वलसे नहीं होसकती जैसे भुज के बल सों अगम्य सागर को कोई आपतिरसके और न दूसरे को तिरा सके ३ अपने अपने पन्थको सारा जहान पालता है तैसे जैन मत पालना भी मतवान मत समझै ४ इस थोथे संसार में और कोई सहायक नहीं है जन्मजन्म जिनदेव का धर्म हमें सहायक हजो ५ ।

घनाक्षरी छन्द

आगरेमेंधर्मबुद्धि' भूधरखँडेरवाल; बालककेख्यालसोंक '
विक्तकरजानेहै । ऐसेहीकहतभयो' जैसिंघसवाई सूबा;
हाकिमगुलावचन्द; रहैतिहिथानेहै । हरीसिंघसाहकेसु '
वंशधर्मरागीनर' तिनकेकहेसेजोडकीनीएकठानेहै । फि

रिफिरिप्रेरेमेरे' आलसकोअन्तभयो' जिनकी सहाय यह मेरेमनमानैहै ॥ १०६ ॥

शब्दार्थ टीका

(आगरा) नगरका नाम (भूधर) कविकानाम (खंडेर वार) जिन का खंडेला वस्ती निकास है (थाने) स्थान (प्रेरे) समझाना ताकीद ।

सरलार्थ टीका

आगरे नगरमें वालक वुद्धि भूधरदास खंडेलवाल बालकपने से कवित्त जोड़ना जाने है ऐसेही गुलाबचन्द नाम जो सवाई जैसिंघ सूवाके हाकिम इस स्थानमें रहैं हैं और हरीसिंघ साहके वंश में धर्मरागी नर हैं तिनके कहनेसे मैंने यह कवित्त जोड़े हैं उनके समझानेसे मेरे आलस्य का अन्त भया जिनको सहायता मेरे मन मानै है ।

दोहा छन्द

सतरहसै इक्यासिया, पोह पाख तम लीन ।
तिथतेरसरविवारको, शतकसँपूरणकीन ॥ १०७ ॥

शब्दार्थ टीका

(पाखतमलीन) कृष्णपक्ष का पखवारा ।

सरलार्थ टीका

सम्वत् सतह सौ इक्यासी १७८१ पोष महीना कृष्णपक्ष को तेरस १३

रविवार को जैनशतक संपूर्ण करा।

इति भूधरदास क्रत मूलछन्दोबद्ध तथा च अमनसिंह क्रत शब्दार्थ। सरलार्थ टीकाभ्यामलङ्कृतश्च जैन शतकः संपूर्णः। फाल्गुणे शुक्लपचे विक्रमाब्दे ॥ १९४७ ॥
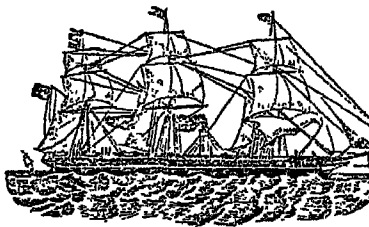
अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
अल्य	अल्प	०	१०	खाय	याय	३४	१२
ठक	ठोक	०	४	सावधाम	सावधान	३७	६
दुर्मिला	दुर्मिला	०	७	लगी	लगो	३८	८
स्वामा	स्वामी	३	५	घड़ी	घरेड़ी	४०	२
तातं	तातैं	४	४	कौलों	कौलौं	४१	३
नकस्कार	नमस्कार	८	४	छवर	छवरी	४६	१०
शलवान	शीलवान	९	४	न	नई	४८	३
जहज	सहज	१०	१३	मैजा	मैराजा	४९	५
महमा	महिमा	१२	१५	पंचोखरों	पंचोलों	४९	६
सरपत	सुरपत	१२	१६	कुडावैहै	कुपावैहै	४९	१०
अप	आप	१३	४	सेवत	सेमत	५१	१
के ल	केवल	१४	३	जों	जो	५२	१६
सीं	सो	१४	१२	के	कै	५४	१०
शात	शीत	१६	२	जैले	जैसे	५५	२
मौसस	मौसम	१६	१०	कुगवा	कुणवा	५६	३
वाज	अवाज	२१	९	जिसौं	जिसमैं	५६	९
असरा	असार	२४	३	हि	ही	५७	१
शरर	शरीर	२४	११	सोमाय	सोमायं	५७	५
झोवै	बैंगन	२४	१६	प त	पण्डित	५७	६
देहको	देहसे	२७	२	मामा	सामा	५७	१३
अङ्ग	अङ्गी	३१	९	ससार	संसार	५७	१४
भई	भाई	३१	१६	०	दोहा	५८	१३
लगै	लागै	३२	८	लखलेत	लेतलख	५९	१०
स्ला	स्त्री	३२	१२	काड़ा	कोड़ा	६१	६
सिवयं	सिवाय	३४	२	अघले	अन्धले	६३	६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
नि न	नित्य	६३	१२	राज	राजा	७१	६
ि रभा	फिरभी	६३	१२	ि न	जिन	७२	९
पासहै	पयेहै	६४	१	ि न	जिन	७२	१७
अघट	प्रघट	६५	७	०	अंखियां	७३	१
दहन	गहन	६६	७	का	को	७३	१२
ीत	प्रीत	६७	१०	अघराज	अघरज	७५	१६
तुय	तुल्य	६८	५	ववन	बरबचन	१०९	१४
रने	रखने	६९	१०	धर्म	वाल	११०	१८
०	छप्पैछन्द	६९	१५				

नामकिताब	क़ी॰	नामकिताब	क़ी॰	नामकिताब	क़ी॰	नामकिताब	क़ी॰
श्रीमद्भागवतसं॰मू॰भा॰		काशीनरेसगोकुल	१०)	भीष्मपर्व॰द्रोणपर्व॰	१।ग	कवित्तरामायणमूल	६
षाटीकाछा॰बंबई	१४)	नाथजीकृत		गदापर्व॰शल्यपर्व॰		कवित्तरामाय॰सटी॰	॥)
श्रीमहाभारतसं॰स॰का	६०)	देवीभागवतभाषा-		स्त्रीपर्व	७	रामायणगीतावलीमू॰	३॥
पावंबई		वार्तिकबारहस्कंद	३)	आश्रमवासिकमूस		रामा॰गीतावलीस॰	॥)
वाल्मीकरामायणसटी	१२)	मोदेहरफ़		लपर्व	३॥	विनयपत्रिकामूल	३॥
श्रीमद्भागवतश्रीधरीटी		सुखसागरभा॰श्री-	६)	स्वर्गारोहनपर्व	७॥	विनयपत्रिकासटी॰	॥)
कादिप्पनसहितमोटे-	१४)	मद्भागवतअक्षरमो		तुलसीकृतरामायण		रामाय॰बाल॰७कां॰	
अक्षर॰मोटाक़ागज़		सुखसागरअक्षरछो	३)	मोटेअक्षरक्षेपकसहि	२)	भाषावार्तिकसंस्कृ	२)
श्रीमद्भागवतश्रीधरीटी		वृहद्‌नारदपुराण	॥ग	तु॰कृ॰रामा॰७कांड	२)	तसेहरेकश्लोकका	
कादिप्पनसहितछोटे	११)	श्रीवाराहपुराणभा	१)	तु॰कृ॰रामायण७	१॥)	फ़ा॰तर्जुमाहुआ	
अक्षर॰क़ागज़मोटा		षापूर्वार्द्ध		कांडमयकोश		रामायणमानसप्रचा	।ग
श्रीमद्भागवतसचूर्णि॰	६)	श्रीवाराहपुराणभा	१ग	तु॰कृ॰रामायणछा॰		रका	
श्रीमद्भागवतसचूर्णि-		षाउत्तरार्द्ध		बंबईबहुतमोटाअ	६)	विनयपत्रिकासरदा	
कादिप्पनसहितनईबी॰		शिवपुराणभाषा	२॥)	क्षर॰मोटाक़ागज़-		सकृत	६
भारतसारसं॰मूलभाषा	८॥)	अवतारकथामृत	॥)	टिप्पनसहित		रामायणअध्यात्मबि	
टीकाछापाबंबई		गरुड़पुराणभा॰टी	॥ग	तु॰कृ॰रामायण७	२)	चारसातोंकांडजमना	३॥)
अध्यात्मरामायण	३॥)	गरुड़पुराणभा॰टी	।ग	कांडछापाबंबई		संकरकृत	
वैद्यरत्नाकरसं॰मूल॰		गर्गसंहितादोहाचौ	१)	तु॰कृ॰रामा॰७कांड	२ग	बालकांड	॥ग
भाषाटीकायहपुस्तक	१॥)	उपदेशकथा	।७	टीकासुखदेवकृत		अयोध्याकांड	२)
अतिउत्तमहै		प्रश्नोत्तरखंडभाषा	।ग	तु॰कृ॰रामा॰सटीक		आरण्यकांड	॥)
भागवतचूर्णिकामूल	४)	विष्णुपुराणभा॰वार्ति	३॥)	पं॰रामचरनदासकृ॰	६)	किष्किंधाकांड	॥ग
सांबपुराण	२॥)	भविष्यपुराण	१॥ग	किताबचुमा		सुन्दरकांड	॥ग
हरिवंशपुराण	२॥)	गनेशपुराणभा॰वार्ति॰	३॥)	तु॰कृ॰रामायणस॰		लंकाकांड	१॥)
गर्गसंहिता	४॥)	स्कंदपुराणसेतुम-	॥)	टीकरामचरनकृत	७)	उत्तरकांड	२)
रामाश्वमेधसं॰मू॰भा॰टी	२)	हात्म्यखंड		खुलेपत्रोंकी		अद्भुतरामायण	३॥
दशमस्कंदभागवतसं॰	३॥)	महाभारतसवलसिं	४॥)	तु॰कृ॰रामायणस॰	२)	पद्मरामायण	।॥
मूलभाषाटी॰का॰मथुरा		हचौदहपर्वकेपहें		सुखदेवकृतखुलेप॰		सीताबनोवास	३॥
विष्णुसहस्रनामभा॰टी	।)	आदिपर्व	४)	तु॰कृ॰रामायणस॰		रामविवाहउत्सव	।)
अनंतकथाभाषाटीका	।॥	सभापर्व	।)	छापामेरठबड़ीसांची		व्रजविलासछापादे॰	१)
वृत्तारकभाषाटीका	२।)	वनपर्व	७॥	अक्षरबहुतमोटासे	७	व्रजविलासछा॰मेर॰	१)
मार्कंडेयपुराण	॥ग	बिराटपर्व	६	सीरामायणआजतक		रामाश्वमेधभा॰दो॰चौ॰	।ग
महाभारतदोहाचौपाई		उद्योगपर्व	।॥	हिंदुस्तानमेंनहींछपी		व्रजविलाससारावली	।॥

नामकिताब	क़ी	नामकिताब	की	नामकिताब	की	नामकिताब	क़ी
सहजप्रकाश	=)	विजयमुक्तावली	।=)	भुजरियाकीलड़ाई	-)	वैद्यमनोत्सव	-)
ग्यानसरोधा	-)	छन्दार्णवपिंगल	=)	मांडोकीलड़ाई	=)	वैद्यकप्रिया	॥-)
शिवसरोदा	=)	कविहृदयविनोद	=)	मलिखानकीलड़ा	-)	दिल्लगन	=)
याग्यवल्क्यस्मृति	॥)	अनुरागलतिका	-)।	आल्हामनुआकील	-)	निघंटरत्नाकरभाषा	
बीजककबीरदास	१)	सभाविलास	-)॥	औरसबलड़ाइयां		संपूर्णम्	६॥)
ग्रंथचरनदासभाषा	१)	सदाव्रह्मारअनेकरा	-)॥	अलहदा२मिलतीहैं		औषधिसारयूनानी	-)॥
पारसभाग	२॥)	रासपंचाध्यायी	-)	मीरसरोवर	=)	वैद्यकसार	=)
बिचारसागररत्नाव		रुक्मिनीचरित्रदोनों		मुग्धबुधसालिंग	=)	व्यंजनप्रकार	=)
कीसहितपीतांवरकृ	४)	रामायणकीलैमें	=)	सालंगासाल्हेचक्षव		वैद्यरत्न	=)
वेदांतविचार	॥)	हीरांझाभूलनोंमें	=)	डाचारभाग	।)	पुष्टिविधानअति	।)
निगमपतीप्रकाश		हरदिलअज़ीज	=)	बालकांड	।=)	उत्तमनवीनग्रंथहै	
स्वामीब्रह्मानंदजीकृ	।)	रासविलासइससें		अयोध्याकांड	।-)	स्त्रीचिकित्सा	=)
विदुरप्रजागरभाषा	।)	रासधारियोंकीली	।)	आरण्यकांड	-)॥	बालचिकित्साभा	-)॥
प्रश्नोत्तरी	-)	रागचमन	=)	किष्किंधाकांड	-)	सालोत्रछोटा	=)
बिचारमालासटीक	॥=)	रनविहारचारोंभाग	।=)	सुन्दरकांड	-)।	औषधिसुधातरंगि	॥)
आत्मपुराणभाषा	१४)	प्रेमलतिका	-)	लंकाकांड	=)	सालोत्रबड़ातर्जुमा	
ग्यानकटारीग्यान		होलीदिलचमन	-)	क्षेपककांड	-)॥	जिन्नतठलखेलत	॥)
प्रकाशगिरधरकृत	।=)॥	कृष्णफाग	-)	उत्तरकांड	=)	सवीरदार	
राघवपंचरत्नइस	॥)	वसंतवहार	-)	रामाश्वमेध	-)॥	भावप्रकाशसरल	
मेंप्रबोधचंद्रोदयता	।=)	गुंचरागकाप्रथमभा	=)	रामकलेवा	-)	भाषारविदत्तकृत	४)
न्यायप्रकाश	७)	नयादूसराभाग	=)	रागरत्नाकरछा०बं०	२)	वैद्यजीवनसटीक	।-)
कविप्रिया	७॥	गुंचेरागमाला	=)	रागमालाप्रथमभा	-)।	बालचिकित्सास०	=)
कविप्रियासटीक	॥=)	दिलदारपचीसी	=)	नयादूसराभाग	-)।	सारंगधरसटीक	
सूरसागरमोटेअक्षर		गुलशनरागहिस्से	-)॥	मोअल्लमसितार	=)	छापालखनऊ	॥)
सवालक्षसंपूर्ण	४)	आल्हखंड४२लड़ाई		वीनाप्रकाश	॥)	माधवनिदानसटी०	२॥
सूरसागरछोटाअक्षर	२॥)	छापामेरठ	॥)	नगमैदिलकशाप्र		योगचिंतामनिबड़ी	
सूरसागरसारइसमें		आल्हखंड४४लड़ाई		थमभाग	।)	छापामथुरा	२॥
भी२०हजारभजनहैं	१॥)	छापामेरठनयाछापा	१)	अमृतकीबूंद	-)	भावप्रकाशसं०सू०	
रसिकप्रिया	॥=)	आल्हखंड४६लड़ा		प्रेमलतिका	-)	भाषाटीका	४)
विश्रामसागर	१-)	ईछापाआगरा	॥)	पावसकेलच्छे	-)	वैद्यरत्नाकरछापा	
प्रेमसागर	॥=)	आल्हखंडकीअल		दूसराभाग	।)	मथुराइसमेंचरक	
कृष्णप्रिया	१-)	हदा२लड़ाईभी		औषधिसंग्रहकल्प		सुश्रुतवाग्भटभाव	२॥
प्रेमसरोवर	।=)	मिलतीहैं		पचक्षी	=)॥	प्रकाशआदिग्रंथों	

नाड़ीप्रकाश ०।।
हंसराजनिदानचित्र ।।=
सहित वैद्यककेग्रं-
थोंमें परीक्षाकेलिये
अतिउत्तम है संस्कृत
मूलभाषाटीका
रसराजसुंदरग्रंथ भा ।।=
तथा दूसराभाग ।।।
अनुपानचिंतामन स- =
चिकित्साकल्पद्रुम ।=
वैद्यककल्पद्रुमछा-
बंबई भाषाटीका ३।।।
माधौनिदान मूल ।)
औरणवीरप्रकाश ७)
द्रव्यगुणवाग्भट्टका
एकभाग छापा कल
कत्ता १)
वंकसैनछापा कलक- १०)
आतमप्रकाशभाषा ३।।)
इलाजुलगुरुबा ।।=
इलाजिसमानी ।)
रिसालेआतिशक-
सौनाक =
अर्कप्रकाशरिसाले =
तिब्बप्रभाकरतर्जु
मातिब्बयूष्फी ।)
तिलस्मातअजायब ०।।
तिब्बअहसानी =
जर्राहीप्रकाश प्रभा =
तथा दूसराभाग ३।।
तथा तीसराभाग ३।।
मीजानतिब्बनागरी ।।।)
क़राबादीनसफाई ।।=
तिब्बरत्नाकरतर्जुमा
क़राबादीनएहसानी ।।=

शरीररतन धातुप्रका- =
लघुतिब्बनिघंट =
तिब्बरतनडाक्टरी ०।।
मुजर्रबादबशीर =
पाकरत्नावली ग्रंथो-
त्व्यंजनप्रकारबड़ा ।)
पंडत दत्तराम मथुरा
निवासीकृतछपताहै
वाग्भट्टभाषाटीका
छापा बंबई ८)
रसायनप्रकाश ।)
रिसालेगिलट प्रभा =
दूसराभाग इसमें हर
तरहके मुल्कमें चढ़ा =
नेकीरीतलिखीहै
मुजर्रबातसंनतकारी २)
इसपुस्तकमेंतरह २
केमुल्कमेंचढ़ानेकी
रीतिऔरआतिशबा
जीरंगरंगकीबनाना
औरसबतरहकेरत्न
हीरामोतीपुखराज
नीलमवगैरहबनाना
औरहरएकचीज़को
साफकरना औरधो
ना-पुरानेकोनयाक
रना-गरजेंकिकुल
हिंदुस्तानकीकारी
गरीलिखी है आज
तकऐसीपुस्तक-
हिन्दुस्तानमेंनागरी
मेंनहींछपी पूरा २
हाल पुस्तकके देख
नेसेमालूमहोगाप्ये
पुस्तक बहुत थोड़ी

छपी हैं हातोंहाथ-
बिकतीचलीजाती
हैं जरूर मंगाकरदे
खनीचाहिये
महूर्तचिंतामणि ३।।)
सारणीमहूर्तचिंताम =
मानसागरी २।।)
रत्नपरीक्षा ।=
नारदसंहिता ।।
रिसालेसतरंजइसमें
सतरंजकापूरा२खे =
लहै
क्रीड़ाकौशिल्याइ
समें तरह २ के खेल
गंजफा-सतरंज-चौ २)
सर औरसवप्रकार
केहैं छापा बंबई
पियूषधारामहूर्तचिं ४)
तामणि
भवनदीपकभाषाटी ।)
बृहद् महूर्तसिंधुछा २)
पा बंबई
मुहूर्तसिंधुछापा- ।।)
लाहौर
बृहत्पाराशरीजोति- ६)
पल्लीपतन ०
सामुद्रिक ०।।
भड्लीकृतशकुनाव-
भड्लीकृतबड़ीछा १)
पा बंबई
भृगुसंहिताछापासे १०)
रहकुंडलियोंसहित
महूर्तचिंतामन सं- ।=
मूलभाषाटीका
जोतिषसारबड़ाछापे ।।)

जोतिषसारछा-भाग-
रा बड़ा ।=
संग्रहशिरोमणिछा- १।।)
परकनऊबहुतउत्तम
भाषाटीका
रमलसिंधुभा-भंग ।)
तिलपरीक्षाअंग-
का फड़कनेकीपरी
क्षा वऔरकोई प्रका
रकीपरीक्षा प्रश्नों
केउत्तरलिखेहैंये
पुस्तकनवीनछपीहै
सातासाईइसमेंहर =
संबतकानामऔर
उसकाफलविस्ता
रपूर्वकलिखाहै
चक्रावलीप्रश्नका ।=
अतिउत्तमग्रंथहै
जिसमेंसबप्रकार
केप्रश्नमिलतेहैं-
दोभाग हैं
रमलजोतिषसार-
भाषा अर्थात् रमल ।)
नवरत्न
रमलनौरत्नभाषा
टीकास-मूलछापा ।।=
मथुरा
ग्रहणावली =
जोतिषविचारभा- ।=
अतिउत्तम
बृहज्योतिषार्णव ७।।)
छापा बंबई इसमें
रमलजोतिषनजूम
केरल प्रश्नवगैरह
सं-मूलभाषाटीका

पत्ता – इन किताबों के मिलने का-लाला नारायण दास जंगलीमल कुतुब फरोश (देहली) ११।

विज्ञापन

समस्त सज्जनोंको विदितहो कि वर्तमान में डाक्तरी हकीमोंकि इलाजोंसे एतद्देशीय धर्म्मात्माओंका धर्म्म चौड़ेमे लुट रहा है, अतस्तद्रक्षार्थ दिल्ली नई सड़क घण्टाघर के समीप "भारद्वाज,, औषधालय खोलागया है इसमें अपनी देशीय औषधां वैद्यक विद्याके अनुसार और प्रत्येकरोग को हकसी नाथकनेवाली बड़ी शुद्धिके साथ तयारकरके गरीब रोगियोंको वेदाम और तालेवरोंको थोड़ासादाम लेकर दईजाती हैं। और "भारतोत्थापन,, पुस्तकालय में 'चतुरसखी, ललित उपन्यासआदि अनेक भाषा वा सँस्कृत की पुस्तक तयारहैं, जिन महाशयों को औषध वा पुस्तकों के विषय पत्र भेजना होवे निम्नमुद्रितपतेसे भेजें यहाँसे कागजात भेजे जावेंगे। और एक मारवाड़ीमित्र नामका मासिक पत्र देवनागरी भाषा में प्रकाश होता है वे मूल्य केवल डाकव्यय ।/) पर यहभी देखनेहो का यक है।

पण्डित काशीनाथ विश्वनाथ ब्र०
महोला आमिली चौराहा (दिल्ली)